केवल सदस्यों के लिए

हनुमत कृपा

वर्ष: 8, अंक: 3, मार्च, 2023

चैत्र नवरात्रि व रामनवमी विशेष

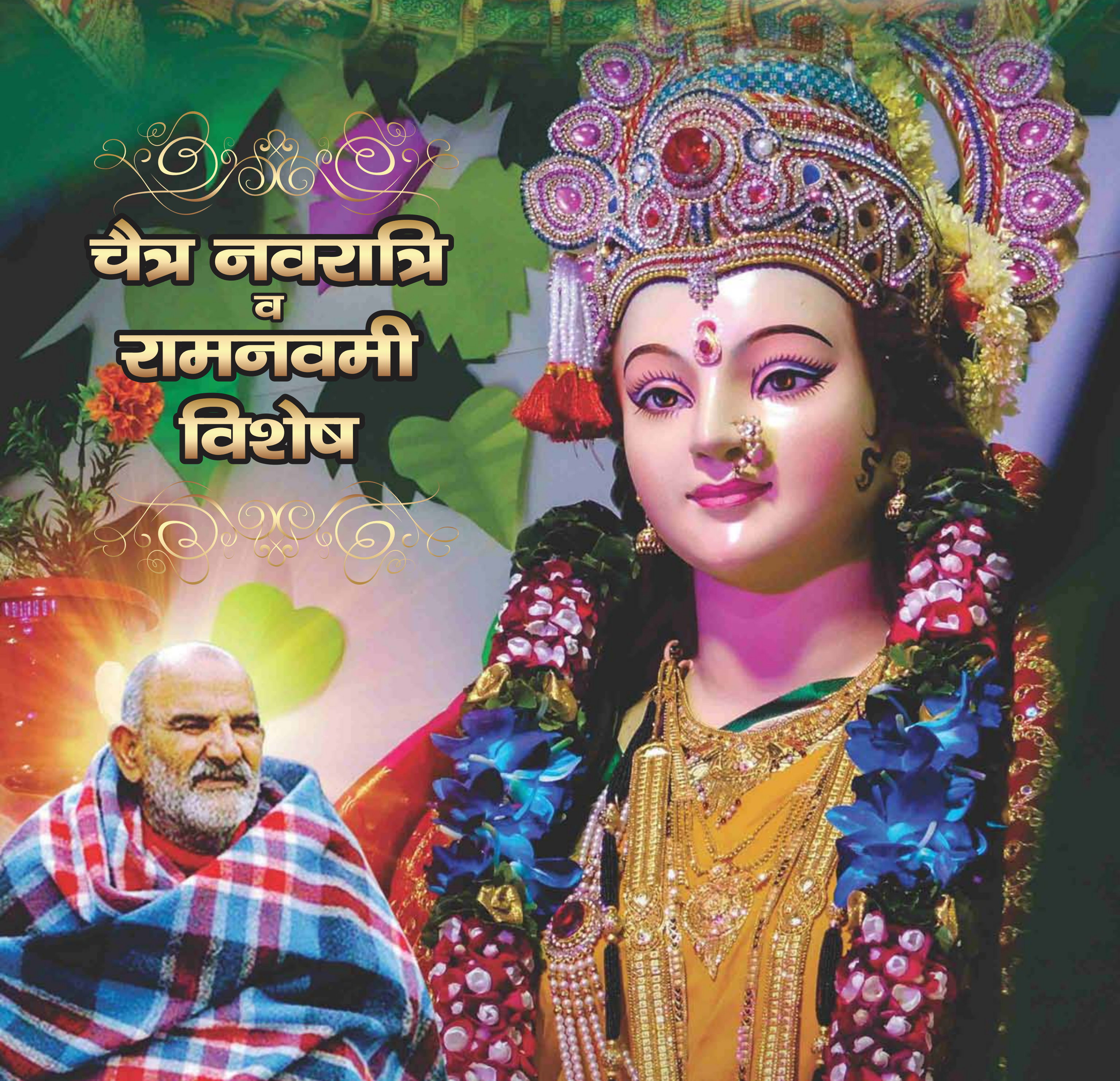

|| जय श्री राम ||

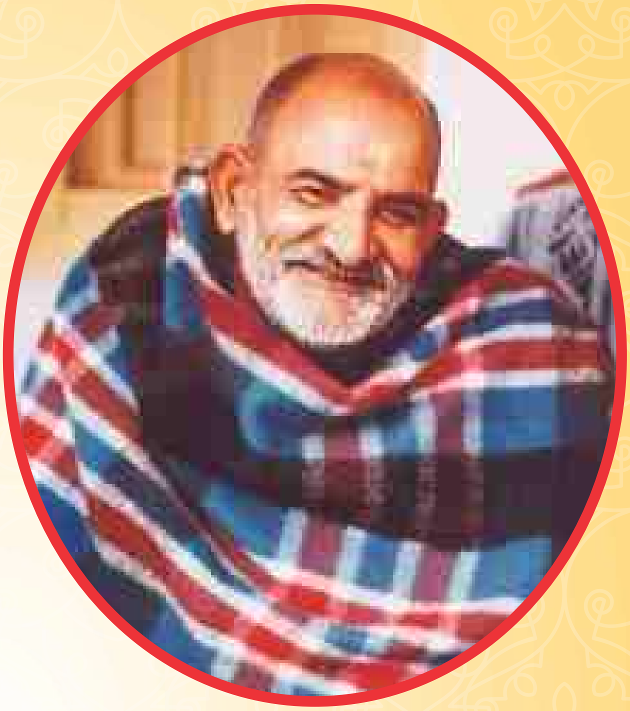

नीम करौली महाराज
(नैनीताल, उत्तराखण्ड)

Courtsey

Pramod Kumar Gupta & Co.

INCOME TAX AND COMMERCIAL TAX PRACTITIONER

Gwalior Off.: 23, Kailash vihar, Opp.Aaykar bhawan, City Centre,
Gwalior - 474011 (M.P.), Ph.: 0751-4012550, 2374000, 2375000
Mob.: 94251-26505, E-mail: shriram26505@gmail.com

Morena Off.: Panchayati Dharmshala, Morena (M.P.)
Ph.: 07532-226505, 94251-28850

E-mail: shriram505@rediffmail.com

हनुमत् कृपा

वर्षः 8, अंकः 3, मार्च, 2023, पृष्ठः 52

प्रेरणास्रोत
स्वामी रामानन्द सरस्वती (यूएसए)

संरक्षक
हनुमत कृपा ट्रस्ट (रजि.)

संरक्षक मण्डल
डा. श्यामलाल कपूर
प्रेम नारायण पाण्डेय
डा. सतीश चन्द्र अग्रवाल

प्रधान संपादक
डा. दिनेश चन्द्र द्विवेदी

अतिथि संपादक
सियाराम पाण्डेय 'शांत'

संपादक
नरेश दीक्षित

संपादकीय सलाहकार
श्रेयांस जैन
आरती कोहली

सह संपादक
रमेश शर्मा

आवरण एवं सज्जा
जितेन्द्र कुमार

संपादकीय कार्यालय
बी–2778, इन्दिरा नगर, लखनऊ –16
मो.: 9415120002
ईमेल: trusthanumatkripa@gmail.com
बेबसाइट :
www.hanumatkripaa.com
hanumatkripamedia
@hanumatkripamed

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक–हनुमत् कृपा ट्रस्ट
संपादक–नरेश दीक्षित
द्वारा शिवा प्रिंटिंग प्रेस, बाबूगंज, डालीगंज, लखनऊ से मुद्रित
एवं बी– 2778, इंदिरा नगर, लखनऊ से प्रकाशित।

इस पत्रिका में प्रकाशित लेख एवं विचार लेखकों के निजी हैं।
प्रकाशक/संपादक इसके लिए उत्तरदायी नहीं हैं।

अनुक्रमणिका

क्रं.	विवरण	पेज सं.
1.	अपनी बात	4
2.	संपादक की कलम से	5
3.	वंदना	6
4.	जगन्माता दुर्गा की दस महाविद्याओं में एक हैं काली	7
5.	फागुन पर लोकगीत	9
6.	सुमिरि पवनसुत पावन नामू	10
7.	जीवन की सारी समस्याओं के हल : बाबा जी महाराज	12
8.	भगत के बस में हैं भगवान	13
9.	बचपन में पिताजी से सुना था बाबाजी का नाम	14
10.	गायत्री मंत्र एवं श्री वाल्मीकि रामायण	15
11.	हनुमान जी की हुई प्राण प्रतिष्ठा	17
12.	ज्ञानमार्ग से ऊपर है प्रेम तत्वः जया किशोरी जी	19
13.	स्तुति	21
14.	महाशिवरात्रि पर शिव–पार्वती विवाह कर महिलाओं ने फूलों की होली खेली	22
15.	दिल्ली मे विराजे बाबा नीब करौरी महाराज	23
16.	साधना के समय आध्यात्मिक ज्ञान	24
17.	बाबा नीब करोरी महाराज जी चरितावली	25
18.	दक्षिण भारत में हनुमान जी	30
19.	ओम स्वरूप गर्ग व उनके परिवारीजनों ने गुरुदेव महाराज के चित्र पर माल्यार्पण कर आशीर्वाद लिया	31
20.	करोलबाग हनुमान मंदिर में बाबा जी के चित्र का अनावरण छह अप्रैल को	32
21.	कैंची धाम हमारे लिए सर्वश्रेष्ठ	33
22.	राम दास (जन्म नाम रिचर्ड एल्पर्ट)	34
23.	जय गुरुदेव	36
24.	सिद्ध संत की पहचान	37
25.	श्रीहनुमान बिड़ला मंदिर में लगेगी गुरुदेव की मूर्ति	38
26.	आनंद यात्रा	39
27.	यादें जिन्हें भूलना मुश्किल	39
28.	कृष्ण दास के भजन सुनकर मंत्रमुग्ध हुए बाबा नीब करौरी महाराज के भक्त	40
29.	एसकेए ग्रीन आर्क सोसायटी स्थित 'शिव मन्दिर' में धूमधाम से मनायी गयी महाशिवरात्रि	42
30.	तुम हो पथिक साधना पथ में	43
31.	करुणा के सिंधु राघव	44
32.	सत्यम् – शिवम् – सुन्दरम्	45
33.	श्री रामेश्वराय नमः	47
34.	बाल मन में हनुमान	48
35.	हनुमत् कृपा मासिक पंचाग अप्रैल 2023	49
36.	सदस्यता पत्र	50

अपनी बात

बदलाव प्रकृति का स्वभाव है। परिवर्तन के बाद ही सृजन का कार्य शुरू होता है। निरंतर नवीनता बनाये रखने के लिए समय के साथ नये प्रयोग जरूरी हैं। श्रीहनुमान जी की कृपा और पूज्य बाबा नीब करौरी महाराज जी के आशीर्वाद से बीते साल साल से देशभर के भक्तजनों तक पहुंच रही हनुमत् कृपा पत्रिका में हिन्दी नववर्ष से किये जा रहे बदलाव भी तेजी से देश – दुनिया के अधिक से अधिक श्रद्धालुजनों तक हनुमान जी के प्रसाद स्वरूप छप रही पत्रिका को पहुंचाने का प्रयास है। इस सदप्रयास को सार्थक बनाने का आशीर्वाद देना हनुमान जी व हनुमत् स्वरूप बाबा जी का कार्य है लेकिन आप भक्तजनों के सहयोग के बिना इसकी सफलता संभव नहीं है। अभी तक हनुमत् कृपा पत्रिका की हार्ड कॉपी सिर्फ वार्षिक, द्विवार्षिक, पंचवार्षिक दसवार्षिक व आजीवन सदस्यता लेने वाले श्रद्धालु लोगों तक ही पहुंच पा रही थी जिसमें भी कभी कभी अपरिहार्य कारणों से व्यवधान आ जाने से नियमित प्रकाशन बाधित हो जाता था। प्रभु कृपा से अब hanumatkripa.com नाम से वेबसाइट बन गयी है जिस पर् दुनियाभर के भक्तजन आध्यात्मिक मासिक पत्रिका 'हनुमत कृपा' पढ़ सकेंगे। इसके अलावा, अब देश के स्थापित 108 हनुमान मंदिरों और पूज्य बाबा नीब करौरी महाराज जी के अधिकतर मंदिर–आश्रमों में पत्रिका उपलब्ध रहेगी जिसका लागत मूल्य देकर भक्तजन प्राप्त कर सकेंगे. अब पत्रिका मंगाने के लिए सदस्यता की बाध्यता समाप्त कर दी गयी है और कार्यालय व सार्वजनिक समारोह में निःशुल्क पत्रिका वितरण पूरी तरह बंद कर दिया गया है.। अब कोई भक्त हनुमत् कृपा मीडिया या हनुमत् कृपा ट्रस्ट के बैंक खाते या नगद लागत मूल्य देकर पत्रिका प्राप्त कर सकता है। वेबसाइट पर् ई–पत्रिका पढ़ने के लिए 25 रुपये मासिक, 151 रुपये छमाही और 251रुपये वार्षिक सहयोग राशि वेबसाइट पर् उपलब्ध क्यूआर कोड में जमा करना होगा। पत्रिका के फ़रवरी अंक से शुरू की गयी 'बाबा जी की सचित्र चरितावली' भक्तजनों को कैसी लगी ? जरूर बताइये। पत्रिका में इसे आगे भी छापने का संकल्प है। बच्चों में धार्मिकता का बीज रोपित करने के इरादे से शुरू किये गये कालम 'बाल मन में भगवान जी' में प्रकाशन के लिए बच्चों के बनाये देवी–देवताओं व सिद्ध संतों के चित्र भेजें ताकि उन्हें पत्रिका में जगह देकर बच्चों का उत्साहवर्धन किया जा सके।

'हनुमत् कृपा' सिर्फ हनुमत् कृपा पत्रिका परिवार या हनुमत् कृपा ट्रस्ट की नहीं, आप सब श्रद्धालु जनों की पत्रिका है। पत्रिका की 10 हजार प्रतियां छापकर आप भक्तों तक पहुंचाना और ई–पत्रिका के जरिये दुनियाभर में 10 लाख भक्तों तक ऑन लाइन डिजिटल पत्रिका पहुंचाने का संकल्प है जो हनुमान जी व बाबा जी की कृपा और आप सबके सहयोग से ही पूरा हो सकता है। सनातन धर्म और भारतीय संस्कृति को अक्षुण्य बनाये रखने और आगे बढ़ाने के लिए हर हिन्दू को जागरूक व धार्मिक होना अति आवश्यक है। सभी सनातनी बंधुओं को प्रतिदिन नजदीकी मंदिर जाना चाहिए। कार्य की व्यस्तता तो मात्र बहाना है। बच्चों में नित्य पूजा–पाठ की आदत डालनी चाहिए। इसके लिए घर का माहौल धर्म प्रधान होना जरूरी है। ज़ब घर के बड़े बूढ़े सुबह जल्दी जागकर स्नान आदि करके पूजा पाठ और रामायण पाठ करेंगे, तभी बच्चों में भी अच्छे संस्कार पड़ेंगे। उन्हें छोटे पर् ही मंदिर ले जाकर भगवान के सामने हाथ जोड़कर प्रार्थना करना सिखाना पड़ता है। तभी वह बड़े होकर खुद मंदिर जाकर प्रभु के आगे माथा टेकते हैं। बच्चों को घर से ही अच्छे संस्कार मिलते हैं जो जीवनभर उनके काम आते हैं। हजारों साल पहले अभिमन्यु के चक्रव्यूह द्वार तोड़ने की विद्या माँ के गर्भ से सीखने की बात सभी ने सुनी होगी। अभी उत्तर प्रदेश के पूर्वांचल क्षेत्र के कुशीनगर जिले के गामीण परिवेश में कथावाचक पिता के घर पैदा हुई सात साल की बेटी अनुष्का पाठक के मुख से भगवत् कथा सुनकर लोग हतप्रभ हैं। यह परिवार की आध्यात्मिक पृष्ठभूमि और माता–पिता की धार्मिक मानसिकता का ही पुण्य है।

पत्रिका के प्रचार–प्रसार के क्रम में देश के सभी प्रांतों की राजधानी, महानगर व अन्य बड़े शहरों के अलावा उत्तर प्रदेश व उत्तराखंड के सभी जिलों में हनुमत् कृपा पत्रिका के अधिकृत प्रतिनिधि बनाये जा रहे हैं। पत्रिका का प्रतिनिधि बनने के लिए आध्यात्मिक व्यक्तित्व के साथ श्रीहनुमान जी व पूज्य गुरुदेव महाराज का भक्त होना अनिवार्य है। धार्मिक कार्यक्रम, लेख व संस्मरण आदि त्रुटिरहित हिन्दी में लिखने का अभ्यास भी होना चाहिए। सनातन धर्म व भारतीय संस्कृति के समर्थक युवा भी इस पुण्य कार्य में आगे आकर अपना सहयोग दे सकते हैं। हमें बिना किसी विचारधारा का विरोध किये अपने एजेंडे को तेजी से आगे बढ़ाना है। हर हिन्दू के घर में श्रीरामचरितमानस, सुंदर कांड व हनुमान चालीसा का नियमित पाठ हो। नवरात्रि में घर में कम से कम एक सदस्य नौ दिन व्रत रखे, विधि विधान से पूजा पाठ करे और नित्य दुर्गा सप्तशती का पाठ करे। श्रीराम नवमी व श्रीकृष्ण जन्माष्टमी धूमधाम व हर्षोल्लास से मनाई जाये। शिवालयों में नियमित रुद्राभिषेक आदि के कार्यक्रम हों। हर हिन्दू के घर में साल में एक बार श्रीरामचरितमानस का अखण्ड पाठ और श्रीसत्य नारायण भगवान की कथा अनिवार्य रूप से हो। हवन – पूजन के कार्यक्रम घर–घर होते रहें। ज़ब भौतिकवाद के बजाय आध्यात्मवाद में मन लगेगा तभी जन कल्याण संभव है।■

संपादक की कलम से

सभी के हृदय में राम का वास

नरेश दीक्षित

राम नाम वह शक्तिपुंज है जिसमें ब्रह्माण्ड की सारी शक्तियां समाहित हैं। संसार में हर व्यक्ति के हृदय में राम का वास है। यही राम हमें गलत कार्यों से रोककर सही रास्ते पर चलने की प्रेरणा देते हैं। राम नाम जाप करने से जो आत्मिक आनंद मिलता है उसे शब्दों में नहीं लिखा जा सकता है। शांत मन से आँखें बंद कर राम नाम का जाप करने से जो शांति मिलती है उसकी सिर्फ अनुभूति की जा सकती है। गोस्वामी तुलसीदास ने भी 'कलयुग केवल नाम अधारा' लिखकर राम नाम जाप को ही सभी समस्याओं को दूर करने वाला महामंत्र बताया है। जिसको राम प्रिय हैं यानि जिसका मन राम में लग गया, वह सबका प्रिय हो गया और उसे सब प्रिय लगने लगे। जिस प्रकार कामी पुरुष सुंदर महिला को देखकर प्रसन्न हो जाता है और लोभी व्यक्ति अकूत धन–सम्पदा पाकर फूला नहीं समाता है। उसी तरह ज़ब भक्त को राम नाम जाप और साधना में आनंद की अनुभूति होने लगे तो समझ लेना चाहिए कि अब प्रभु की कृपा होनी शुरू हो गयी है। श्रीराम के प्रति हनुमान जी जैसी भक्ति का भाव रखने की इच्छा मन में पैदा करने की जरूरत होती है। यह सही है कि जैसे–जैसे प्रभु के प्रति मन में प्रेम पैदा होगा, सांसारिक व्यक्तिओं और वस्तुओं से मोह भंग होना शुरू हो जाएगा।

प्रभु श्रीराम और हनुमान जी के चिंतन–मनन से जीवन की दिशा–दशा बदलनी उतना ही तय है जितना गलत रास्ते पर चलकर सब कुछ बर्बाद होना। किसी से कोई उम्मीद न करना और जो कुछ कहना सिर्फ प्रभु से कहना, जीवन की मस्ती का मूलमंत्र है। जो सर्वशक्तिमान है और पूरी दुनिया जिसके आगे याचक दृष्टि से हाथ जोड़े खड़ी रहती है, जो मांगना है उसी से मांगो। प्रभु में आस्था रखने वाला व्यक्ति कभी हताश–निराश हो ही नहीं सकता है क्योंकि उसकी सभी जरूरतें प्रभु अपने आप पूरी किये रहते हैं। सुख–दुःख जीवन के अभिन्न अंग हैं, इसे सहज स्वीकार करना चाहिए। प्रभु श्रीराम का आचरण इसका पुख्ता प्रमाण है। अयोध्या में अपने राजतिलक की जानकारी मिलने पर वह न तो हर्षित होते हैं और कुछ ही देर बाद वनगमन की सूचना पर उन्हें कोई विषाद भी नहीं होता है। जीवन में सब कुछ प्रभु पर छोड़ सिर्फ कर्म को प्राथमिकता देनी चाहिए। अच्छे कर्म करने वाला कभी बुरे फल भोग ही नहीं सकता है। अपने लिए ही नहीं दूसरों के लिए भी अच्छा सोचो ताकि उसका स्नेह व सम्मान भी आपको मिल सके। यह कभी मत सोचो कि आपके लिए कौन क्या कर रहा है बल्कि सोचना यह चाहिए कि हम किसके लिए क्या कर रहे हैं। हर व्यक्ति के मन मंदिर में प्रभु का वास होता है। वह सबकी प्रार्थना भी सुनते हैं और गुनाह भी देखते हैं। भगवान से मांगने की इच्छा हो तो निःस्वार्थ भक्ति मांगनी चाहिए। इससे जन्म–मृत्यु के बंधन से मुक्ति मिलेगी और मोक्ष का रास्ता खुलेगा। धन–सम्पत्ति और सांसारिक विलासिता क्षणभंगुर है। इहलोक और परलोक दोनों में साथ रहने वाला प्रभु के प्रति निश्छल प्रेम और समर्पण ही है। भोग–विलासिता के जीवन में आनंद खोजना वैसे ही है जैसे रेगिस्तान में पानी की तलाश। जो सुख, शांति व आनंद सत्संगति, प्रभु भक्ति और ध्यान–साधना में है वह वातानुकूलित घर वाहन और भौतिक सुख–सुविधाओं में नहीं। प्रभु से साक्षात्कार के लिए घर परिवार छोड़कर एकांत के लिए न तो हिमालय की कंदराओं में जाने की जरूरत है और न गांव के बाहर कुटी बनाकर रहने की। घर में परिवार के साथ रहकर संत गृहस्थ का जीवन सर्वश्रेष्ठ है।

आध्यात्म के रास्ते पर चलने का तात्पर्य ईश्वर का आशीर्वाद मिलना है। जीवन में तभी तक माया मोह का अंधकार है ज़ब तक प्रभु कृपा का प्रकाश नहीं फैलता। भगवान श्रीराम के जीवन की हर घटना कोई न कोई संदेश देती है। मानव जीवन उम घटने वाली सभी घटनाएं पूर्व निर्धारित होती हैं। भगवान राम के जन्म से लेकर विवाह तक सभी संस्कार ऋषि–मुनियों ने अति शुभ घड़ी में करवाए थे लेकिन पहले से तय घटनाक्रम के तहत चक्रवर्ती राजा दशरथ के बेटे होने के बावजूद राम और जनकनंदनी सीता जी को वनवास काल के दौरान सामान्य लोगों की तरह दर–दर भटकना पड़ा। ■

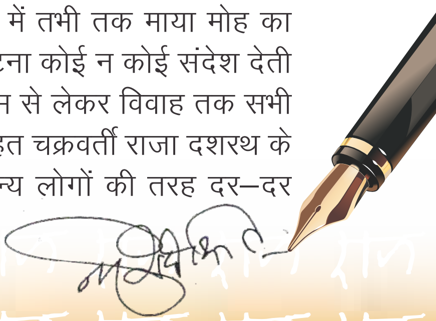

सर्वमंगल मांगल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके

देवी माता आप पधारो
करो जगत कल्यान
नौ रूपों में आइये
स्वागत को तैयार
सजे हुये हैं घर मन्दिर में
तोरण वन्दनवार
सबसे पहले मां दो हम को
सदबुद्धि का ज्ञान
देवी माता आप पधारो
करो जगत कल्यान
बुद्धि हमारी निर्मल रखना
दूर रहे हमसे अभिमान
नहीं हमें कुछ और चाहिये
बस इतना देना वरदान
देवी माता आप पधारो
करो जगत कल्यान
शुभ चिन्तन रहे सदा मेरा
श्री चरणों में नित प्रीति रहे
मात पिता गुरू ईश्वर के प्रति
रहे सदा मन में सम्मान
देवी माता आप पधारो
करो जगत कल्यान

अनुपमा द्विवेदी 'आर्वी'
बैंगलोर

जगन्माता दुर्गा की दस महाविद्याओं में एक हैं काली

सियाराम पांडेय 'शांत'
लखनऊ
मो.: 7355629443

चैत्र नवरात्र आने में कुछ ही दिन शेष है। यह उस माता का यजन पर्व है, पूजन पर्व है, जो समूचे ब्रह्मांड का संचालन करती हैं। जो हर जगह निवासी करती है। ग्रह नक्षत्र ब्रह्मांड घनेरे सब गतिमान तुम्हारे प्रेरे। सकल सृष्टि की प्राण विधाता, पालक पोषक नाशक त्राता। यह प्रार्थना यूं ही नहीं की गई। माता पार्वती ही जगन्माता है और भगवान शिव ही जगद्पिता है। इस बात को जानते हुए जो साधक परांबा शक्ति भगवती की आराधना करता है, वह अष्ट सिद्धियों और नव–निधियों को सहज ही प्राप्त कर लेता है। मां महाकाली दस महाविद्याओं में एक हैं। वे कलातीत हैं। कल्याण हृदया हैं। शिवा है। कल्याण को भी जन्म देने वाली और परम कल्याणकारी हैं। इनकी आराधना का प्रतिफल शत्रुओं और कषाय–कल्मषों का नाश है। सामान्यतया दुर्गा को ही काली कहते हैं। काली को महाकाल की सहधर्मिणी कहा गया है। महाकाल अर्थात् सुविस्तृत समय सौरभ। काल का महत्व स्वीकार करने वाले, उसकी उपयोगिता समझने वाले, उसका सदुपयोग करने वाले ही सही मायने में काली के उपासक कहलाने के अधिकारी हैं।

आलस्य में शरीर और प्रमाद में मन की क्षमता को नष्ट होने से बचा लिया जाए तो सामान्य स्तर का मनुष्य भी अभीष्ट उद्देश्यों कर प्राप्ति में सफल हो सकता है। समय ही ईश्वर प्रदत्त वह सम्पदा है जिसका उपयोग कर मनुष्य जिस प्रकार की भी सफलता प्राप्त करना चाहे उसे प्राप्त कर सकता है। ईश्वर सूक्ष्म है, उसका पुत्र जीव भी सूक्ष्म है। पिता से पुत्र को मनुष्य जन्म का महान् अनुदान तो मिला ही है, साथ ही समय रूपी ऐसा अदृश्य धन भी मिला है जिसे यदि आलस्य–प्रमाद में बर्बाद न किया जाए, किसी प्रयोजन विशेष के लिए नियोजित रखा जाए तो उसके बदले में सांसारिक एवं आध्यात्मिक सम्पदाएं प्रचुर परिमाण में उपलब्ध की जा सकती है। इस तथ्य को गायत्री काली विग्रह में स्पष्ट किया गया है। हर दिन व्यस्त योजना बनाकर चलना और उस प्रयास में प्राणपण से एकाग्र भाव से, जुटे रहना इष्ट प्राप्ति का सुनियोजित आधार है । इसी रीति–नीति में गहन श्रद्धा उत्पन्न कर लेना महाकाल की उपासना है। इसके अवलंबन से महामानवों की भूमिका को सम्पादित कर सकना संभव हो सकता है ।

दुर्गा, चण्डी, अम्बा, शिवा, पार्वती उन्हीं मां आदिशक्ति के नाम हैं। इनका एक रूप संघ शक्ति भी है। एकाकीपन सदा अपूर्ण ही रहता है, भले ही वह कितना ही समर्थ, सुयोग्य एवं सम्पन्न क्यों न हो । जिसे जितना सहयोग मिल जाता है वह उसी क्रम से आगे बढ़ता है। संगठन की महिमा अपार है। व्यक्ति और समाज की सारी प्रगति, समृद्धि और शान्ति का आधार सामूहिकता एवं सहकारिता है। अब तक की मानवीय उपलब्धियां सहकारी प्रकृति के कारण ही सम्भव हुई हैं। भविष्य में भी कुछ महत्वपूर्ण पाना हो तो उसे सम्मिलित उपायों से ही प्राप्त किया जा जा सकता है।

||| देवि पूजि पद कमल तुम्हारे। सुर नर मुनि सब होहिं सुखारे।। |||

दुर्गा अवतार की कथा है कि असुरों द्वारा संत्रस्त देवताओं का उद्धार करने के लिए प्रजापति ने उनका तेज एकत्रित किया था और उसे काली का रूप देकर प्रचण्ड शक्ति उत्पन्न की थी। उस चण्डी ने अपने पराक्रम से असुरों को निरस्त किया था और देवताओं को उनका उचित स्थान दिलाया था। इस कथा में यही प्रतिपादन है कि सामूहिकता की शक्ति असीम है। इसका जिस भी प्रयोजन में उपयोग किया जाएगा, उसी में असाधारण सफलता मिलती चली जाएगी।

दुर्गा का वाहन सिंह पराक्रम का प्रतीक है। दुर्गा जी की गतिविधियों में संघर्ष की प्रधानता है। जीवन संग्राम में विजय प्राप्त करने के लिए हर किसी को आंतरिक दुर्बलताओं और स्वभावगत दुष्प्रवृत्तियों से निरंतर जूझना पड़ता है। बाह्य जीवन में अवांछनीयताओं एवं अनीतियों के आक्रमण होते रहते हैं और अवरोध सामने खड़े रहते हैं । उनसे संघर्ष करने के अतिरिक्त और कोई चारा नहीं है। शांति से रहना तो सभी चाहते हैं, पर आक्रमण और अवरोधों से बच निकलना बेहद कठिन है। उससे संघर्ष करने के अतिरिक्त और कोई चारा नहीं। ऐसे साहस का, शौर्य–पराक्रम का उद्भव गायत्री महाशक्ति के अंतर्गत दुर्गा तत्त्व के उभरने पर संभव होता है।

मां काली का विकराल मुख असुरता को भयभीत करने वाला है। चार हाथों में खड्ग और राक्षस का सिर असुरता के विनाश हेतु, खप्पर (पात्र) धारण शक्ति का तथा अभयमुद्रा देव पक्ष के लिए आश्वासन है। शिव के मार्ग में आने पर रोष में भी पैर उठा रह जाना शिवत्व की मर्यादा रखने का प्रतीक है। देवी काली कृष्णवर्णी हैं। भयभीत कर देने वाला रूप, लगभग नग्न अथवा अर्धनग्न, चार भुजाएं, मुण्डमाल धारण किये हुए एवं श्मशान भूमि (कहीं–कहीं रणभूमि) में शिव पर आरूढ़ हैं। उनके बाल खुले एवं नेत्र क्रोधाग्नि से दीप्त हैं। यह महाविद्याओं का प्रथम रूप है। शेष सब महाविद्याएं काली से जन्मी या उनका ही रूप ही मानी जाती है। देवी काली पूर्व में बंगाल के अलावा कश्मीर के तंत्र सम्प्रदाय में मुख्य स्थान रखती है, विशेषत: नवीं सदी के लेखक अभिनवगुप्त के तंत्रलोक साहित्य में देवी काली का स्थान प्रधान्यता से आरक्षित है । साधारण शैव मत में देवी प्रकृति के सौम्य स्वरूप पार्वती को शिव की शिष्या के रूप में चित्रित किया गया है परंतु तंत्र संप्रदाय में काली को ही सर्वोच्च मान्यता प्राप्त है। उदाहरणार्थ निर्वाण तंत्र में लिखा है कि ब्रह्मा, विष्णु और शिव देवी

काली से ही उत्पन्न हुए हैं, जैसे सागर के जल से बुलबुले उत्पन्न होते हैं, और देवी काली से उनकी तुलना करना पशुओं के चलने से भूमि पर बने चिन्हों में संगृहीत जल से, सागर के जल की तुलना करने जैसा है। काली के चरित्र में कई रोचक बातें हैं। उदाहरणार्थ देवी काली की पूजा तांत्रिक, कापालिक सम्प्रदायों के अलावा सामान्यतः झारखण्ड–बंगाल की डोम एवं हाड़ी जाति में कुलदेवी की पूजा की तरह प्रचलित है ।

तंत्र में साधना अथवा पूजा की विधि भी सामान्य देवी–देवताओं की पूजा पद्धति से काफी विलग है। यहाँ साधक की आवश्यकता अनुसार देवी पूजा का प्रावधान है। अर्थात पूजा से पहले उद्देश्य चयनित किया जाये फिर उस चयनित उद्देश्य के अनुसार विशिष्ट देवी की पूजा की जाये। तंत्र–साधना में पूजा गोपनीय और रहस्यात्मक होती है जिसमें 'पंचमकार' (मद्य, मांस, मत्स्य, मुद्रा एवं मैथुन) का सिद्धांत उपयोग में लिया जाता है, एवं इसका स्वाभाविक स्थान शमशान भूमि होती है। सहजिया तांत्रिक संप्रदाय में, परमात्मा की प्राप्ति का मार्ग विवाह अनिष्ठा (जार कर्म) है। तंत्र संप्रदाय का यह दर्शन हमें प्रचलित भूतवाद और लोकायत दर्शन के समीप ले जाता है जिस पर चर्चा अन्यत्र कभी की जा सकती है। अभी देवी काली के चरित्र पर केंद्रित रहना ही उचित है।

काली अर्थात काल की शक्ति, मृत्यु की अधिष्ठात्री। भय, आतंक, अंधकार, उन्माद, आक्रामकता

॥ देवि पूजि पद कमल तुम्हारे। सुर नर मुनि सब होंहिं सुखारे।। ॥

और अन्य तमाम तामसिक गुणों से युक्त एक ऐसी स्त्रैण शक्ति जो आवाहन पर प्रकट होती है, शत्रु पक्ष का संहार करती है, तत्पश्चात शत्रुओं का रक्त–मांस का भक्षण करती है, उनका मुण्डमाल धारण करती हैं, शवों पर नृत्य करती है, अपने अनुचरों के साथ संरक्षित क्षेत्र में निवास करती है। उड़ीसा राज्य की एक जनश्रुति के अनुसार महिसासुर की पराजय के लिए देवी दुर्गा के समक्ष एक शर्त है जिसके अनुसार देवी को अपने यौनांग महिसासुर को प्रदर्शित करने होंगे सिर्फ तब ही वह उस असुर को पराजित करने में सक्षम हो सकती है। देवी ऐसा ही करती है परन्तु क्रोध के कारण उनका रूप विनाशिनी काली में परिवर्तित हो जाता है एवं यह मानसिक अवस्था ऐसा रूप ले लेती है जिसमें उनके समक्ष जो भी आता है वे उसका संहार कर देती हैं। तत्पश्चात देवी को शांत करने के लिए शिव को उनके पैरों के नीचे समक्ष लेट जाना पड़ता है जिससे देवी हतप्रभ रह जाती हैं और उनका क्रोध विस्मृत हो जाता है। देवी काली के बिखरे केश, लगभग नग्न या अर्धनग्न अवस्था, युद्ध और रति में उन्मादपूर्ण आक्रामकता, रक्तपात, उन्मादित नृत्य, लगभग चिढ़ाने की मुद्रा में बाहर निकली जीभ। इन प्रतीकों की भौतिकवादी व्याख्या निसंदेह अकादमीय रुचि की वस्तु हो सकती है परन्तु यह प्रतीकात्मक चित्र अपने आप में एक अलग स्त्रैण भावकृ संसार का चित्र दर्शक के समक्ष प्रस्तुत करता है, जिसमें भय है, रहस्य है, आतंक है, अनियंत्रण है, वितृष्णा उत्पन्न करने की क्षमता है।

उन्मत, शिव पर आरूढ़ देवी के खुले बाल, रात्रि के अंधकार समान एक भयभीत करने वाला दृश्य उत्पन्न करता है। कई जगह कुछ महाविद्याओं के बाल खुले चित्रित किये जाते हैं जबकि कुछ स्थानों पर कुछ महाविद्याओं के केश बंधे पाये गए हैं। दुर्गा सप्तशती मंदिर नगवा (वाराणसी) में महाविद्याओं के केश खुले हैं। यह देखने में एक सामान्य बात प्रतीत होती है, पर इसका भी एक गूढ़ और जटिल सामाजिक प्रतीकीकरण से सम्बन्ध है। हम एक दृश्य स्मरण करते हैं। देवी काली एवं अन्य महाविद्याओं का इस प्रकार खुले केश में चित्रित होना जहाँ सामाजिक व्यवस्था से इस समूह के चिरकालिक विद्रोह को दर्शाता है वहीं चिर कौमार्य से सज्जित मातृत्वहीनता के प्रत्यय को भरपूर बल के साथ समाज के समक्ष रखता है। ■

फागुन पर लोकगीत

अमऊ बौराने फगुनवा मा।
फिर महुआ कुचाने फगुनवा मा॥
डारि पात पर आई जवानी।
फूल हंसें कलिया मुस्कानी।
कलियन की गलियान मा रसिया-
"भ्रमर" मडराने फगुनवा मा।...01
महर-महर महकी फुलवरिया।
छाई बना पै सलोनी ललरिया।
लह-लह लहलहात अंगारन अस,
फिर टेसू फुलाने फगुनवा मा...-02
ढुरुर-ढुरुर ढुर ढुरकी बयरिया।
कुहकी फिर विरहीकोइरलिया॥
तन-मन सिहरे, संयम बिसरे,
विरही अकुलाने फगुनवा मां...-03
लाज-शरम धइ ताखे बहुरिया।
बाबा पै मारैं हुमुकि पिचकरिया॥
भौजी कहि छ्याडैं बहुरियन का,
बाबौ मस्ताने, फगुनवा मा..-04
थिरकि-थिरकि कै गावैं कबीरा ।
अंग-अंग रंगैं लगावैं अबीरा॥
अठखेली करैं भौजाइन ते,
देवरा नहिं मानैं फगुनवा मा..-05
रंग-विरंगी चुनरिया धारिसि ।
धरती गगनवा का सनकारिसि॥
लखि धरती गगनवा का मिलन "भ्रमर',
देवतौ ललचाने फगुनवा मा..
अमऊ बौराने फगुनवा मा..

सम्पत्ति कुमार मिश्र "भ्रमर बैसवारी"
साहित्यकार कवि पत्रकार, लखनऊ
मो.: 9454831866

देवि पूजि पद कमल तुम्हारे। सुर नर मुनि सब होहिं सुखारे।।

सुमिरि पवनसुत पावन नामू

दरबारियों ने उपहास किया कि 'बंदर मोती का मूल्य क्या जाने' तो हनुमान जी ने कहा कि जिस वस्तु में मेरे स्वामी प्रभु राम की छवि नहीं वह मेरे किस काम की। दरबारियों को विश्वास नहीं हुआ तो अपने तीक्ष्ण नखों से हृदय विदीर्ण कर सियाराम की मनोरम झाँकी के दर्शन करा दिए।

डॉ. सतीश चन्द्र अग्रवाल
हल्द्वानी, नैनीताल
मो.: 7300520353

मानस की सुप्रसिद्ध चौपाई है– 'सुमिरि पवनसुत पावन नामू। अपने बस करि राखे रामू।।' अर्थात् पवनसुत हनुमान जी महाराज ने प्रभु श्रीराम के पावन नाम का अहर्निश स्मरण–जप करके श्री राम को अपने वश में कर लिया। भक्तवत्सल भगवान तो अपने सामान्य भक्त के भी प्रेमपाश में बँध कर नाना प्रकार की लीलाएँ करते हैं– जैसे कि नरसी भगत के लिए साँवरा सेठ बन नानीबाई के पास मायरा भर आते हैं, भक्त सूरदास को कुएँ से निकालने के लिए ग्रामीण बालक बन गए, द्रौपदी की लाज बचाने हेतु वस्त्रावतार धारण किया तो गजेंद्र को ग्राह से बचाने दौड़े चले आए। ग्वाल वालों के साथ खेल किए– माखन चोरी लीला की तो ब्रजवनिताओं के साथ रास रचाया। ऐसे अनेकानेक उदाहरण हमारे पौराणिक ग्रंथों में मिलते हैं तथा आज भी देखने–सुनने में आ जाते हैं। फिर एकादश रुद्रावतार शंकर सुवन केसरी नंदन जो कि नित्य निरन्तर माता सीता व स्वामी प्रभु राम की सेवा में रत रहते हों, वे यदि राम जी को वश में कर लें तो आश्चर्य कैसा। सीता जी की खोज के लिए हनुमान जी को जाम्बवन्त जी ने कहा–"राम काज लगि तव अवतारा।" तो हनुमान जी उत्साहित हो पर्वताकार स्वरुप में आ गए। 'चलेउ हरषि हियँ धरि रघुनाथा', 'बार बार रघुवीर सँभारी'– 'मसक समान रूप कपि धरी। लंकहि चलेउ सुमिरि नरहरी।'– कहने का तात्पर्य यह है कि बजरंगबली राम नाम का आश्रय कभी नहीं छोड़ते तथा कर्तृत्व अभिमान भी पास नहीं आने देते। उनके इसी गुण ने राम जी को यह कहने को विवश कर दिया– सुन कपि तोहि समान उपकारी। नहिं कोउ सुर नर मुनि तनधारी।' प्रति उपकार करौं का तोरा। सन्मुख होइ न सकत मन मोरा।।" जिनके रोम–रोम में राम ऐसे श्री हनुमान। राम दरबार में जब मोतियों की माला भेंट की गई तो हनुमान जी दाँतों से मोती तोड़ कर फेंकने लगे। दरबारियों ने उपहास किया कि 'बंदर मोती का मूल्य क्या जाने' तो हनुमान जी ने कहा कि जिस वस्तु में मेरे स्वामी प्रभु राम की छवि नहीं वह मेरे किस काम की। दरबारियों को विश्वास नहीं हुआ तो अपने तीक्ष्ण नखों से हृदय विदीर्ण कर सियाराम की मनोरम झाँकी के दर्शन करा दिए। नाम की बड़ी विलक्षण महिमा है। एक कवि ने लिखा है–

नाम के प्रताप तें जल पर तरे पाषान।
नाम–बल सागर उलाँघ्यो सहज ही हनुमान।।
नाम–बल संभव सकल जे कछु असंभव जान।
धन्य ते नर रहत जिनके नाम रट की बान।।
नाम की महिमा अमित, को सकै करि गुनगान।
राम तें बड़ नाम, जेहि बल बिकत श्रीभगवान।।

कलियुग का तो एक मात्र साधन नाम स्मरण

॥ देवि पूजि पद कमल तुम्हारे। सुर नर मुनि सब होंहि सुखारे।। ॥

नाम–संकीर्तन और नामजप को ही बताया गया है। 'कलियुग जोग न जग्य न ज्ञाना। एक अधार राम गुण गाना।।' जिस प्रकार बहुत समय से अंधकाराछन्न भवन में दीपज्योति जलाते ही अंधकार दूर हो जाता है उसी प्रकार नाम स्मरण मात्र से पाप समूह नष्ट होने लगते हैं।–

सुनिअ तासु गुन ग्राम, जासु नाम अघ खग बधिक।

पाप रूपी पक्षी को मारने के लिए प्रभु का नाम बधिक के समान है। नाम जप साधन ही नहीं वरन साध्य भी है।

राम नाम नर केसरी कनककशिपु कलिकाल।
जापक जन प्रहलाद जिमी पालिहि दलि सुरसाल।।

राम नाम नृसिंह भगवान हैं, कलियुग हिरण्यकशिपु है। जप करने वाले जन प्रहलाद के समान हैं। राम नाम देवताओं के शत्रु कलिकाल को मार कर जापक की रक्षा करता है।

आदि गुरु शंकराचार्य कहते हैं– 'भज गोविन्दम् भज गोविन्दम् गोविन्दम् भज मूढ़मते।' मीराबाई का प्रसिद्ध भजन है– पायोजी मैंने राम रतन धन पायो। वस्तु अमोलक दी मेरे सतगुरु, किरपा करी अपनायो।' गुरु नानक ने तो यहाँ तक कह दिया– 'राम नाम बिनु बिरथे जगि जनमा'। राम नाम के बिना प्राणी का जन्म ही व्यर्थ है। सभी संतो, भक्तों व ग्रंथों का यही मत है। तुलसीदास जी कहते हैं–

कहौं–कहाँ लगी नाम बड़ाई
राम न सकहिं नाम गुण गाई।।

स्वयं भगवान भोलेनाथ राम नाम महामंत्र का जाप करते रहते हैं– 'महामंत्र जोइ जपत महेसू'। भगवत गीता में भगवान श्रीकृष्ण भी अर्जुन से कहते हैं– हे पार्थ! जो अनन्य भाव से निरंतर मेरा स्मरण करता है उसके लिए मैं सुलभ हूँ क्योंकि वह मेरी भक्ति में प्रवृत्त रहता है–

अनन्यचेताः सततं यो मां स्मरति नित्यशः।
तस्याहं सुलभः पार्थ नित्ययुक्तस्य योगिनः।। (8/14)

भगवान के नाम की ऐसी महिमा है कि उसे कोई किसी प्रकार भी ले उसका फल होता ही है। जिस प्रकार भूमि में बीजों को छिटक दें तो उल्टे–सीधे सभी बीज अंकुरित हो जाते हैं उसी प्रकार उठते–बैठते चलते–फिरते काम करते कैसे भी हरि स्मरण किया जाए वह भी फलीभूत होता है। यहाँ तक कि 'उल्टा नाम जपत जग जाना। बाल्मीकि भये ब्रह्म समाना।' राम–राम नहीं जप सके तो मरा–मरा जप कर भी खुँखार डाकू रत्नाकर से 'रामायण' के रचयिता महर्षि बाल्मीकि बन गये। यह है नाम जप की महिमा। 'भायँ कुभायँ अनख आलसहुँ। नाम जपत मंगल दिसि दसहूँ।।'

अतएव भगवान के किसी भी नाम का जप किसी भी काल में, किसी भी अवस्था में, किसी भी निमित्त से, किसी के भी द्वारा किया जाए– परम कल्याणकारक ही होता है। विष्णुपुराण में तो कहा गया है कि विवश होकर भी हरि के नाम का कीर्तन करने से संपूर्ण पाप वैसे ही दूर भाग जाते हैं जैसे सिंह के डर से हिरण समूह–

अवशेनापि यन्नाम्नि कीर्तिते सर्वपातकैः।
पुमान विमुच्यते सद्यः सिंह त्रस्तैमृगैरिव।।

शुक सनकादि सिद्ध, मुनि व योगीगण नाम के प्रसाद से ब्रह्मानंद को प्राप्त हुए। नारद, ध्रुव, प्रहलाद से लेकर चैतन्य महाप्रभु, सूर, कबीर, तुलसी, मीरा, नामदेव, तुकाराम, नरसी, रैदास, नानक, दादू आदि अनंत संत श्रृंखला है जिन्होंने नाम का आश्रय लिया और नाम की महिमा बताई। पूज्य नीब करौरी महाराज ने भी राम नाम जप किया और कराया। उनका वचन था नाम जप से सब काम बन जाते हैं। अतः पुनः गोस्वामी तुलसीदास जी के शब्दों–

राम नाम मनिदीप धरु जीह देहरीं द्वार।
तुलसी भीतर बाहेरहुँ जौं चाहसि उजियार।।

अर्थात हे प्राणी! यदि तू भीतर और बाहर दोनों ओर उजाला चाहता है तो मुख रूपी द्वार की जीभ रूपी देहली रामनाम रूपी मणि–दीपक को रख। ■

||| देवि पूजि पद कमल तुम्हारे। सुर नर मुनि सब होंहिं सुखारे।। |||

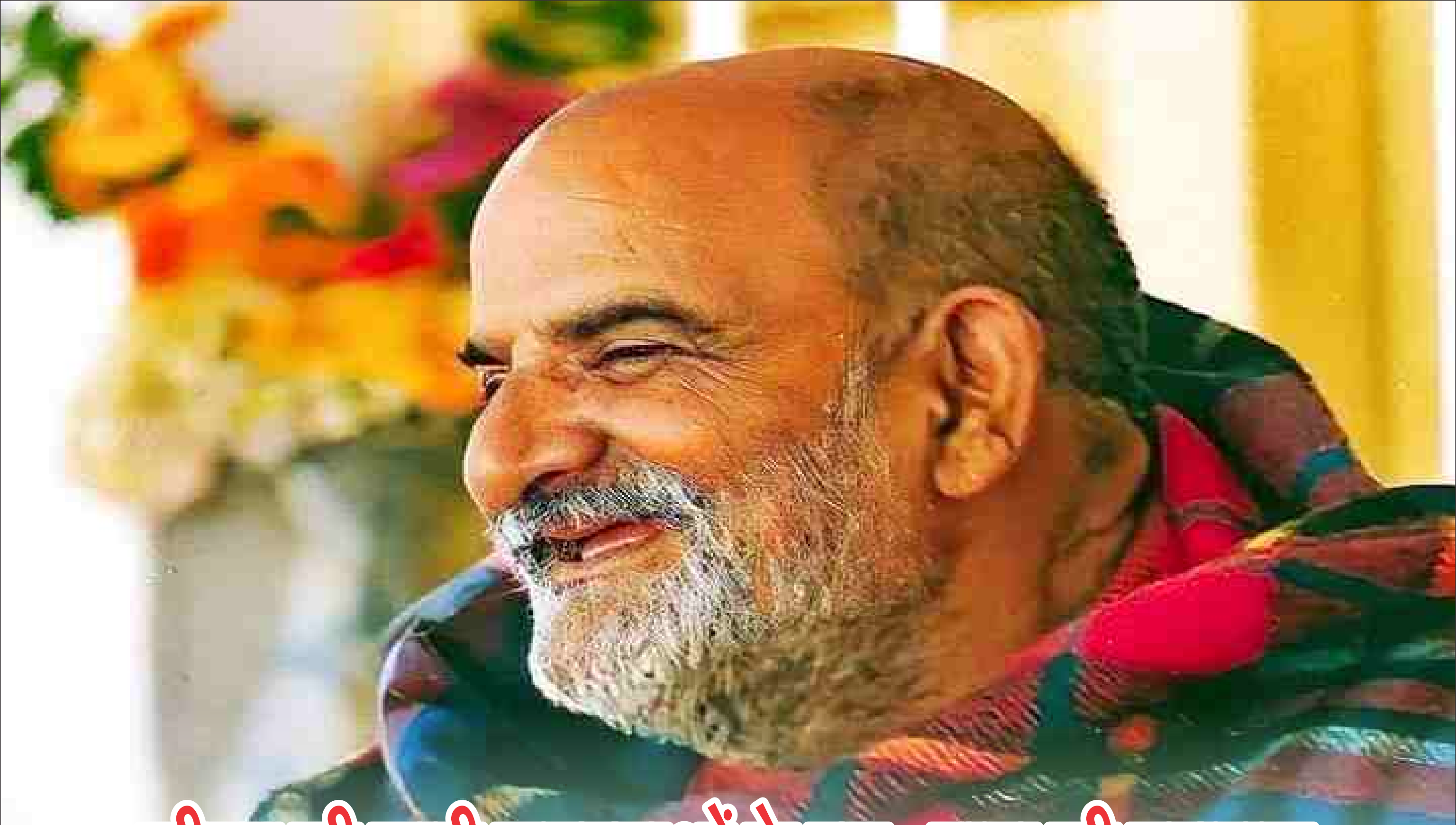

जीवन की सारी समस्याओं के हल : बाबा जी महाराज

बा बा जी महाराज से मेरा जुड़ाव अक्टूबर 2019 से हुआ, जब मैंने उनका चित्र फेसबुक पर एक मित्र जो कि अब मेरे पति हैं, उनके कवर पेज पर मैंने बाबा की तस्वीर देखी और मन में बहुत जिज्ञासा हुई कि यह कौन हैं, तब मैंने यूट्यूब पर बाबा जी महाराज को खोजा और दस्तक मीडिया चैनल से मुझे बाबा की कथाएं सुनने को मिली फिर बाबा जी महाराज की कृपा से बाबा के भक्तों से जुड़ती चली गई। जीवन की सारी समस्याओं के हल बस बाबा जी महाराज की कही गई वाणी, कि 'राम' नाम से भाग्य में लिखा हुआ कुअंक भी मिट जाता है। मैं राम राम का जाप रोज करती रही, हनुमान चालीसा पढ़ती रही और सारी समस्याओं के निदान मिलते गए। बाबा जी महाराज की कृपा से ही मेरा विवाह मेरे मनपसंद व्यक्ति से संभव हुआ और विवाह की सारी व्यवस्थाएं भी बाबा की कृपा से एक के बाद एक होती चली गई। इसमें कोई संशय ही नहीं कि बाबा जी महाराज की कृपा से असंभव भी संभव है। मेरी शादी के बाद मेरे छोटे मामा जी बहुत बीमार हो गए। सारे इलाज करवा लिए उन्होंने, डॉक्टर्स कोई बीमारी समझ ही नहीं पा रहे थे। फिर कहीं तांत्रिक ओझा ने बताया कि उनका समय निकट आ गया है। मुझे जब मामी जी ने बाद सब बताया तो मैंने उनको बाबा जी महाराज का चित्र लाकर घर में रखने को कहा, राम राम का जाप हनुमान चालीसा का पाठ करने को कहा, उन्होंने ऐसा ही किया। मामाजी आठ महीने से ऑफिस नहीं गए थे, उनकी गंभीर हालत थी। बाबा जी महाराज की कृपा से वह ठीक होने लगे और अब ऑफिस जाने लगे। अब वह पूर्णतया स्वस्थ हैं। सबको यह बहुत बड़ा चमत्कार लगा। मेरी मम्मी ने शादी के समय, मेरे लिए बनवाए गए गहने मुझे नहीं दिए, मुझे कई बार उस बात के लिए दुःख होता है। मैंने बाबा जी से प्रार्थना की और शादी के सवा साल बाद मम्मी ने बिना मेरे माँगे मेरे सारे जेवर मुझे दे दिए। बाबा जी महाराज की कृपा से ही मेरे पति की स्थायी नौकरी लगी। बाबा जी महाराज की कृपा तो हर रोज उनके भक्तों पर बरसती है और यह अनुभव उनके भक्त हर रोज करते हैं। ■

शैलजा बृजेश
दिल्ली

देवि पूजि पद कमल तुम्हारे। सुर नर मुनि सब होंहिं सुखारे।।

भगत के बस में हैं भगवान

भक्त को भगवान से बड़ा माना गया है। भगवान को संसार में सबसे प्रिय भक्त होता है। भक्त की बात टालना प्रभु के लिए असंभव है। तभी तो कहा जाता है कि भगवान भक्त के बस में रहते हैं। सच्चे मन से की गयी भक्त की पुकार सुनकर भगवान दौड़े चले आते हैं। तभी तो भक्तजनों के बीच सबसे ज्यादा गाया जाने वाला भजन 'प्रबल प्रेम के बस में पड़कर प्रभु को नियम बदलते देखा, अपना मान भले टल जाये भक्त का मान न टलते देखा' जन–जन का भजन बन गया। यह बात वाशिंगटन डीसी (अमेरिका) में रह रहे भारतीय मूल के वरिष्ठ वैज्ञानिक व हनुमान भक्त स्वामी रामानंद सरस्वती ने बीते दिनों ऑन लाइन जूम मीटिंग के दौरान हनुमत् कृपा सत्संग में कही। स्वामी जी ने कहा कि भक्त की करुण पुकार सुनकर भगवान बिना विलम्ब किये नंगे पैर दौड़े चले आते हैं, इसके एक नहीं सैकड़ों प्रमाण हैं।

स्वामी जी ने ऑन लाइन सत्संग में कहा कि भगवान भक्त की कमियां नहीं खूबियां देखते हैं। ज़ब भक्त का अहंकार खत्म हो जाता है और वह प्रभु के सामने शरणागत होकर विनतभाव से प्रार्थना करता है तब भगवान उसके सारे दुर्गुणों को अनदेखा करके उसे हमेशा के लिए अपनी शरण में ले लेते हैं। भगवान भक्त के विश्वास को कभी टूटने नहीं देते हैं। अपने मान–सम्मान की चिंता किये बिना भक्त का सम्मान बढ़ाना उनका स्वभाव है। स्वामी जी ने बताया कि प्रभु को बालक प्रहलाद का मान रखने के लिए लकड़ी के खम्भे से प्रकट होना पड़ा था।

स्वामी रामानंद जी ने हनुमान जी की महिमा को बखान करते हुए कहा कि हनुमान जी के बारे में जितना भी कहा जाये वह कम है। बाबा तुलसीदास ने सुंदर कांड के प्रारम्भ में ही हनुमान जी की स्तुति करते हुए कहा कि 'अतुलितबलधामं हेमशैलाभदेहं, दनुजवनकृष्णानुं ज्ञानिनामग्रगण्यं, सकलगुणनिधानं वानराणामधीशं। रघुपतिप्रियभक्तं वातात्मजं नमामि।

स्वामी जी मानना है कि ब्रह्माण्ड में कोई ऐसा कार्य नहीं है जो हनुमान जी की सीमा के बाहर है। यहाँ तक मृतक को जीवनदान देना हनुमान जी के लिए सामान्य बात है। कवन सो काज कठिन जग माहीं। जो नहिं होइ तात तुम्ह पाहीं।। स्वामी जी ने बताया कि उनका विश्वास है कि कलियुग में हनुमान जी जैसी कृपा कहीं दिखाई नहीं पड़ती। जैसे ही कोई भक्त इनके आराध्य भगवान श्रीराम का नाम लेना शुरू करता है उसे हनुमान जी की कृपा आने की अनुभूति होने लगती है। यही इनकी परम् कृपा है।

स्वामी रामानंद सरस्वती
इंटरनेशनल सोसायटी फार स्प्रिचुअल एडवांसमेंट (यूएसए)

बचपन में पिताजी से सुना था बाबाजी का नाम

आज मुझे मेरे नीब करौरी बाबा की महिमा आप सबके सामने लाने का सौभाग्य इस पवित्र पत्रिका के द्वारा प्राप्त हुआ, ये भी मेरे नीब करौली बाबा की ही कृपा है।

मैं अपनी भावनाओं को बहुत गहराई से शब्दों में व्यक्त कर सकूं तो ये भी मेरे बाबा की ही कृपा होगी। मेरा जन्म मेघालय प्रांत के शिलौंग नामक शहर में हुआ सन् 1967 में, मैंने जबसे होश संभाला तब से मैंने मेरे पिता को प्रतिदिन हनुमान चालीसा का प्रतिदिन 100 बार सुबह ही पाठ करते देखा, ये उनकी नित्य की दिनचर्या थी। पिता की श्री हनुमान जी के प्रति अनन्य भक्ति देख कर मैं भी हनुमान जी के प्रति भक्ति भाव से परिपूर्ण होती चली गई,मेरे पिता उन दिनों किन्हीं बाबा जी का भी नाम स्मरण करते थे जिस नाम को में भूल गई थी क्योंकि तब मैं बहुत छोटी थी।

एक बार कि घटना जो मैं जीवन में कभी नही भूली और अब मेरे समझ में आया की ईश्वर अपने भक्तों पर किस तरह कृपा करते हैं।वो घटना मैं आप सब के साथ साझा कर रही हूं। उस समय मैं कक्षा 2 में पढ़ती थी।मेरे मामा जी वाराणसी से शिलाँग हम सब से मिलने आए थे, एक दिन वो मुझे और मेरी छोटी बहन को लेकर घूमने गए, शिलौंग एक पहाड़ी इलाका है जहां ज्यादातर लोग पैदल, साइकिल और टैक्सी या बस आदि से ही उन दिनों सफर करते थे, हम लोग पैदल ही घूम रहे थे, पुलिस बाजार चौराहे पर में अचानक सड़क दौड़ कर पार करने लगी और एक टैक्सी के नीचे आ गई। मुझे आज भी उस टैक्सी में बैठी सवारियों की चीख की आवाज याद है और ब्रेक की भयानक आवाज भी, पर मुझे सिर्फ हाथ और पैर में हल्की सी खरोच आई थी। हम लोग घर पहुंचे तो मेरे पिता जी मेरे छोटे भाई को धर्मयुग पत्रिका में तस्वीर दिखा रहे थे, मां खाना बना रही थी, मैं घबराई हुई दौड़कर पिता जी के गले लग कर रोने लगी, उन्हें टैक्सी के नीचे आने का वाक्या बताया, वो मेरे माथे पर हाथ फेर कर बोले, "बेटा इन्हें प्रणाम करो, इन्होंने ही तुम्हारी रक्षा की है "धर्मयुग पत्रिका के मुख्य पृष्ठ पर बाबा नीब करौली की तस्वीर थी।

अंजलि शर्मा

गोरखपुर

धीरे–धीरे वक्त बीतता गया, बस एक अस्पष्ट सी धुंधली यादें जेहन में रह गई, पिछले वर्ष मेरी बेटियां नैनीताल गई थी एक प्रतियोगी परीक्षा देने, कैंची धाम रास्ते में पड़ा था, पर उन्हें उनकी महिमा का पता भी नहीं था और शायद बाबा जी की कृपा भी नहीं थी, वो दर्शन नही कर पाई, अचानक एक दिन किसी के जरीए मेरी एक बेटी को इस पत्रिका में 'कान्हा' के लिए कुछ लिखने का अवसर प्राप्त हुआ और बस यहीं से बाबा नीब करौली ने मुझ पर अपनी कृपा दृष्टि डाल दी, मुझे कैंची धाम आने का सौभाग्य प्रदान किया और जैसे ही मैंने बाबा जी के दर्शन किए मेरी आंखों से टप–टप आंसु बहने लगे क्योंकि वह मेरे जेहन में अस्पष्ट तस्वीर पिछले 50 वर्षों से थीं स्पष्ट हो चुकी थी, मेरे बाबा ने अपनी इस बेटी को सब कुछ याद दिला दिया,उन्होंने ये साबित कर दिया वो अपने भक्तों को कभी नही छोड़ते।

ये मेरे जीवन की ऐसी सच्ची घटना है जो ये साबित करता है की ईश्वर सर्वव्यापी है, अपनी संतानों पर उनकी दृष्टि सदैव बनी रहती है। ■

||| देवि पूजि पद कमल तुम्हारे। सुर नर मुनि सब होंहि सुखारे।। |||

गायत्री मंत्र एवं श्री वाल्मीकि रामायण

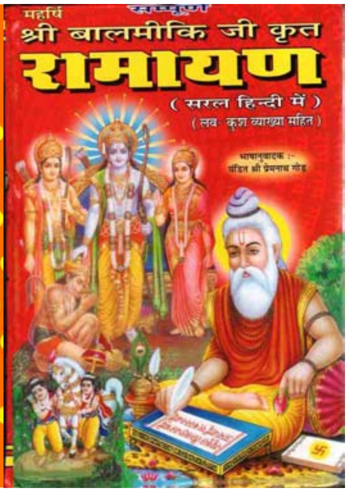

डॉ. दिनेश चन्द्र द्विवेदी
बंगलौर, कर्नाटक
मो.: +91–8073335789

हमारे धर्म ग्रन्थों में श्री गायत्री मंत्र को महामंत्र बताया गया है । गायत्री मंत्र को प्रथम महामंत्र भी कहा गया है। इस मंत्र के रचनाकार महर्षि विश्वामित्र को बताया गया है। यह मंत्र इस प्रकार है

ॐ भूर्भुव: स्व: तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहिं धियो यो न: प्रचोदयात् अर्थात : हम– उस सृष्टिकर्ता प्रकाशमान परमात्मा जो सम्पूर्ण जगत के लिये प्राणस्वरूप है का ध्यान करते हैं। परमात्मा का वह तेज बुद्धि को सन्मार्ग की ओर चलने के लिये प्रेरित करे। यह ऋगवेद के तृतीय मंडल के बांसठवें सूक्त का दशम मंत्र है। चौबीस अक्षर का यह मंत्र है । (1) तत् (2) स: (3) वि: (4) तु: (5) व: (6) रे: (7) णि: (8) यं: (9) भ: (10) र्गो: (11) दे: (12) व: (13) स्य: (14) धी: (15) म: (16) हिं: (17) धि: (18) यो: (19) यो: (20) न: (21) प्र: (22) चो: (23) द: (24) यात्:

इस मंत्र में ॐ अखिल ब्रहमाण्ड नायक परमपिता परमेश्वर एवं भूर्भुव: स्व: सम्पूर्ण ब्रहमाण्ड का प्रतिनिधित्व करते हैं। जिस प्रकार संगीत को उसके सुरों के माध्यम से व्यक्त करते हैं उसी तरह गायत्री छन्दात्मक लेखन की एक विधा है जिसमे लिखे गये मंत्रों को गायन के स्वरूप में प्रस्तुत करते हैं। यह परमपिता परमेश्वर के प्रति पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ उनसे अपनी बुद्धि की शुचिता की प्रार्थना करते हैं। महर्षि वाल्मीकि द्वारा विरचित रामायण भगवान श्री राम जी के चरित्र का लिपिवद्ध साहित्य है। श्री वाल्मीकि रामायण काण्ड, सर्ग एवं श्लोको में विभक्त है। प्रथम बालकाण्ड 2280 श्लोक 77 सर्गो में, द्वितीय अयोध्या काण्ड 4286 श्लोक 119 सर्गो में, तृतीय अरण्य काण्ड 2440 श्लोक 75 सर्गो में, चतुर्थ किष्किन्धा काण्ड 2455 श्लोक 67 सर्गों में, पंचम सुन्दर काण्ड 2855 श्लोक 68 सर्गों में षष्ठं युद्ध काण्ड 5692 श्लोक 128 सर्गों में तथा सप्तम उत्तर काण्ड 3432 श्लोक 111 सर्गों में विभक्त है। इस प्रकार गणना करने पर कुल सर्ग 645 तथा कुल श्लोक 23440 हैं। यहां यह दृष्टव्य है कि यदि इन सभी श्लोकों को 1000 की संख्या के खण्डों में वर्गीकृत किया जाय तो कुल खण्डों की संख्या 24 हो जाती है। इन सभी चौबीस खण्डों के प्रथम श्लोक के प्रथम वर्ण को मिला कर लिखा जाय तो वह गायत्री मंत्र के स्वरूप में स्पष्ट होता है। कहा जा सकता है कि महर्षि वाल्मीकि जी ने श्री गायत्री मंत्र के प्रत्येक वर्ण को संपुट के रूप में प्रयोग किया है ।

लंका विजय के उपरान्त प्रभु श्री राम जी का

॥ देवि पूजि पद कमल तुम्हारे। सुर नर मुनि सब होंहि सुखारे।। ॥

अयोध्या के राज्य सिंहासन पर राज्याभिषेक हुआ तथा उसके बाद प्रभु श्री राम जी ने लगभग 11000 वर्ष शासन किया। उसी काल खण्ड में महर्षि ने, जो श्री राम के समकालीन थे, रामायण की रचना की थी। कहते हैं कि मूल वाल्मीकि रामायण में प्रति 1000 श्लोकों के खण्ड में प्रथम श्लोक का प्रथम अक्षर लेकर सम्मिलित करने से गायत्री मंत्र की रचना हो जाती है। स्वाभाविक है कि त्रेतायुग से आजतक के इस दीर्घ कालखण्ड में श्री वाल्मीकि रामायण में अनेक परिवर्तन किये गये होंगे। परिणाम स्वरूप इलोकों के स्थल में परिवर्तन हो जाने कारण उनका संख्यात्मक मान व स्थिति बदल गयी होगी।

वाल्मीकि रामायण बालकाण्ड :

तपःस्वाध्यायनिरतं तपस्वी वाग्विदां वरम्। नारदं परिपप्रच्छ वाल्मीकिर्मुनिपुंगवम।।१।।
स हत्वा राक्षसान् सर्वान् यज्ञघ्नान् रघुनन्दनः। ऋषिभिः पूजितस्तत्र यथेन्द्रो विजये पुरा ।।२।।
विश्वामित्रस्तु धर्मात्मा श्रुत्वा जनक भाषितम्। वत्स राम धनुः पश्य इति राघवमब्रवीत।।३।।

वाल्मीकि रामायण अयोध्याकाण्ड :

तुष्टावास्य तदा वंशं प्रविश्य स विशांपतेः। शयनीयं नरेन्द्रस्य तदासाद्य व्यतिष्ठत।।४।।
वनवासं हि संख्याय वासांस्याभरणानि च। भर्तारमनुगच्छन्त्यै सीतायै श्वसुरो ददौ।। ५।।
राजा सत्य च धर्मश्रच राज कुलवतां कुल। राज माता पिता चैव राज हितकरो नृणाम ।। ६।।
निरीक्ष्य स मुहूर्तं तु ददर्श भरतो गुरूम्। उटजे राममासीनं जटामण्डलधारिणम।।७।।

वाल्मीकि रामायण अरण्यकाण्ड :

यदि बुद्धिः कृता द्रष्टुमगस्त्यं तं महामुनिम्। अद्यैव गमने बुद्धिं रोचयस्व महामते ।।८।।
भरतस्यार्यपुत्रस्य श्वश्रूणां मम च प्रभो। मृगरूपमिदं दिव्यं विस्मयं जनयिष्यति।।९।।
गच्छ शीघ्रामितो वीर सुग्रीवं तं महाबलम्। वयस्यं त क्षिप्रमितो गत्वाऽद्य । राघव।। १०।।

वाल्मीकि रामायण किष्किन्धाकाण्ड :

देशकालौ भजस्वाद्य क्षममापः प्रियाप्रिये। सुख–दुःखसहः काले सुग्रीववशगो भव।।११।।
वन्दितव्यास्ततः सिद्धास्तपसा वीतकल्मषाः। प्रष्टव्या चापि सीतायाः प्रवृत्तिर्विनयान्वितौ।।१२ ।।

वाल्मीकि रामायण सुन्दरकाण्ड :

स निर्जित्य पुरीं लंकां श्रेष्ठां तां कामरूपिणम्। विक्रमेण महातेजा हनुमान् कपिसत्तमः।।१३।।
धन्या देवाः सगन्धर्वाः सिद्धाश्रच परमर्षयः। मम पश्यन्ति ये वीरं रामं राजीवलोचनम्।।१४।।
मंगलाभिमुखी तस्य सा तदासीन्महाकपेः। उपतस्थे विशालाक्षी प्रयता हव्यवाहनम्।।१५।।।

वाल्मीकि रामायण युद्धकाण्ड :

हितं महा मृदु हेतुसंहितं व्यतीतकाला यतिसंप्रतिक्षमम। निशम्य तद्वाक्यमुपस्थितज्वरः प्रसंगवानुत्तरमेतदब्रवीत।। १६ ।।
धर्मात्मा राक्षसश्रेष्ठः संप्रप्तोऽयं विभीषणः। लंकैश्रवर्यमिदं श्रीमान्ध्रुवं प्राप्नोत्यकंटकाम्।।१७।।
यो वज्रपाताशनिसंनिपातान्न चुक्षुभ नापि चचाल राज। स रामबाणाभिहितो भृशार्तश्रचचाल चापं च मुमोच वीरः ।।१८।।
यस्य विकमासाद्य राक्षसा निधनं गताः। त मन्ये राघवं वीर नारायणमनामयम।।१९।।
न ते ददृशिरे राम दहन्तमपिवाहिनीम्। मोहित परमास्त्रेण गान्धर्वेण महात्मना।।२०।।
प्रणम्य दैवतेभ्यश्रच ब्राह्मणेभ्यश्रच मैथिली। श्रद्धांजलिपुटा चेदमुवाचाग्निसमीपतः।। २१।।

वाल्मीकि रामायण उत्तरकाण्ड :

चालनात्पर्वतस्यैव गणा देवस्य कविताः। चचाल पार्वती चापि तदाश्रिलष्टा महेश्वरम्।।२२।।
दाराः पुत्राः पुरं राष्ट्र भोगाच्छादनभोजनम। सर्वमेवाविभक्तं नौ भविष्यति हरीश्वर।। २३।।
यामेव रात्रिं शत्रुघ्न पर्णशालां समाविशत्। तामेव रात्रिं सीतापि प्रासूत दारकद्वयम् ।।२४।।

इन सभी चौबीस श्लोकों में प्रभु श्रीराम जी के लीला चरित्र को तो विस्तार दिया ही गया है साथ में सामाजिक एवं आध्यात्मिक, सामाजिक एवं नीतिगत संवेदनाओं को भी उजागर किया गया है। ■

||| देवि पूजि पद कमल तुम्हारे। सुर नर मुनि सब होंहि सुखारे।। |||

हनुमान जी की हुई प्राण प्रतिष्ठा

सुनील श्रीवास्तव
जौनपुर
मो.: 9455322393

मुद्दई लाख बुरा चाहे तो क्या होता है।
वही होता है जो मंजूरे खुदा होता है।।
धर्म पर चलने वालों का कभी भगवान ना बदले।
छुरी गर्दन पर चल जाए मगर ईमान ना बदले।।
स्वीकार करो मम प्रार्थना हे हनुमत ललाम।
करो पूर्ण संकल्प मम शत्–शत् तुम्हें प्रणाम।।

भक्त को भगवान के चमत्कार देखने में बहुत मजा आता है और अगर भगवान चमत्कार ना दिखाये तो भक्तों को लगता है कि वह भगवान नहीं है। भगवान हनुमान जिनको कलयुग का साक्षात देव बताया गया है। वह हनुमान मंदिर आज 26 फरवरी 2023 को हनुमान जी का ऐसा चुनिंदा मंदिर हरीनाथ यादव के द्वारा कुद्दूपुर के खिरी महादेव के बगल में हो रहा है। इस हनुमान मंदिर के देख रेख सुनील यादव के द्वारा होगा।

इंसान झूठी माया को एकत्रित करने में अपना पूरा समय गंवा देता है। भूलकर भी परमात्मा हनुमान जी के नाम का स्मरण नहीं करता है विपत्ति घेरती है। तब हनुमत के शरण में जाता है।

''परम पूर्ण परमात्मा–परमपूर्ण उद्देश्य
परम पूर्ण से पूर्ण भा–बचा जो शेष
उसी पूर्व के पूर्णता कण कण के आयाम
को नतमस्तक हो करु कोटिस कोटि प्रणाम''
मैं सबका होकर देख लिया– अब तेरा होना बाकी है
शरणागत प्रभु तोरी मैं विनय करूं कर जोर
मेरी भव वाधा हरो–प्रेम पयोधी डोर

हनुमान जी सभी संकटों को दूर करते हैं इसीलिए इनको संकटमोचन कहा जाता है। (संकट मोचन नाम तिहारो) हनुमान जी को प्रसन्न करने का सबसे सरल तरीका हनुमान चालीसा है। नियमित पाठ पढ़ने से मानसिक तनाव से मुक्ति देकर हम सबके आत्मविश्वास में सहायक हैं। देवी, दानवी और मानवी सृष्टि में हनुमत का मान और महत्व सर्वोच्च है।

||| देवि पूजि पद कमल तुम्हारे। सुर नर मुनि सब होंहि सुखारे।। |||

''सिंदूर से प्रभु आपका–करता हूं सम्मान
भक्ति को शक्ति मिले–मांग रहा वरदान
धनजन दे प्रभु कामना–हे जग के करतार
मैं बालक अज्ञान हूँ–चमका दे संसार''
दीपक की लौ से प्रभु–भेज रहा संदेश
विनय सुनो कपि श्रेष्ठ मेरा पूर्ण करो उद्देश्य
तुम बिन मेरा जीवन है कीट पतंग समान
हर्षित होकर 'सुनील' का पूर्ण करो अरमान

हनुमान जी बाबा नीम करोली बाबा सबके मन और विचार को साफ करें क्योंकि ''ऐसे महंगे श्वास का एक श्वास जो जाय 14 लोग पटतर नहीं–काहे धूल मिलाय'' हनुमान के भजन/पाठ के बिना विषय भोगों के भोगों में श्वासों को लगाना यह मिट्टी में मिलना ही तो

क्या है? इंसान झूठी माया को एकत्रित करने में अपना पूरा समय गंवा देता है। भूलकर भी परमात्मा हनुमान जी के नाम का स्मरण नहीं करता है विपत्ति घेरती है। तब हनुमत के शरण में जाता है। जिस प्रकार धन को बुरे कामों में लगाना अच्छा नहीं होता उसी प्रकार श्वासों को

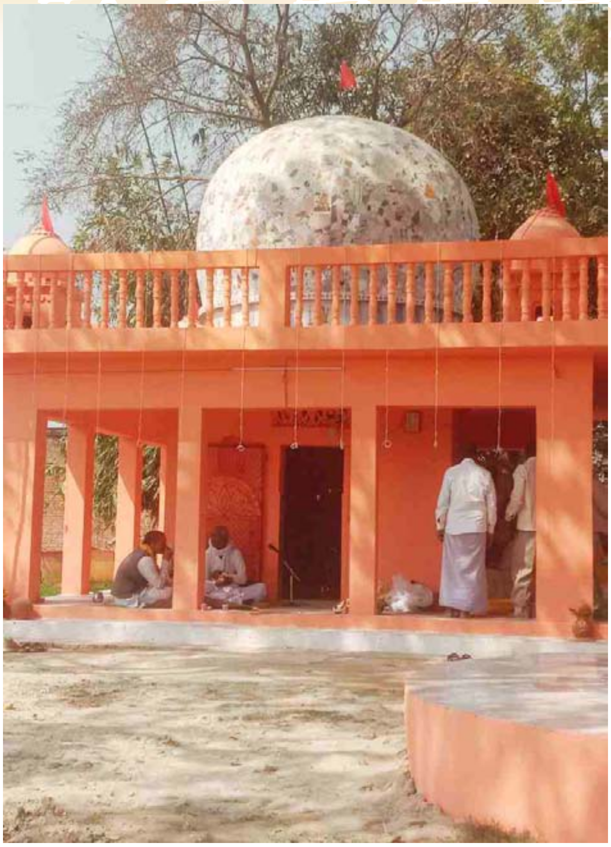

बुरे कामों में लगाना अच्छा नहीं होता है। हनुमान जी आप सर्वशक्तिमान और सर्वव्यापी हो सबके पालन पोषण करने वाले रक्षक और अंतर्यामी हो। आप सब प्रकार के दुःखों रोगों और चिन्ताओं के मिटाने वाले हैं। वैसा ही जौनपुर के स्थानीय क्षेत्र के कुद्दूपुर (क्षेत्र के खीरी महादेव मंदिर के गांव में एक नवनिर्मित हनुमान मंदिर बजरंगबली भगवान की प्रतिमा राम लक्ष्मण सीता की प्रतिमा की स्थापना व प्राण प्रतिष्ठा वैदिक विधि और मंत्रोच्चार द्वारा संपन्न हुआ। इसके बाद धाम में आयोजित विशाल भंडारा का आयोजन हुआ जिसमें हजारों लोगों ने प्रसाद ग्रहण किया। 26 फरवरी को मंगलाचरण व देवी देवताओं के आवाहन के बाद अनुष्ठान का शुभारंभ, अखंड श्रीरामचरितमानस पाठ से हुआ। सुनील यादव के मंत्रोच्चार के बीच प्रतिमा की प्राण–प्रतिष्ठा हुई और आरती भोग लगाने के बाद मंदिर का पट दर्शन पूजन हेतु खोल दिया गया। जयघोष से पूरा परिसर जयकारे से गूंज उठा। समस्त ग्राम वासियों ने बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया। ■

देवि पूजि पद कमल तुम्हारे। सुर नर मुनि सब होहिं सुखारे।।

ज्ञानमार्ग से ऊपर है प्रेम तत्व: जया किशोरी जी

रमेश शर्मा
लखनऊ
मो.: 9455555758

श्रीमद् भागवत कथा का हृदय है गोपी उद्धव संवाद। जिस तरह से शरीर में हृदय का विशेष स्थान होता है। उसी प्रकार श्रीमद् भागवत कथा में गोपी उद्धव संवाद का है। भगवान श्रीकृष्ण वृंदावन से मथुरा आ गए। उन्हें वृंदावन की बहुत याद आती है। भगवान के अंतरंग सखा उद्धव थे। कृष्ण को बहुत प्यार करते थे। बिल्कुल कृष्ण जैसी उनकी चाल ढाल, रूप रंग और हरकत एक जैसी। देवताओं के गुरु बृहस्पति जी से उद्धव ने विद्या प्राप्त की थी। उद्धव में कृष्ण से एक चीज की कमी थी। उद्धव जी के लिए सबसे ऊपर ज्ञान था। भगवान कृष्ण जानते थे कि ज्ञान से ऊपर प्रेम है। भगवान कोशिश कर रहे थे कि इस प्रेम तत्व को उद्धव को कैसे समझाएं। भगवान के घर मथुरा में एक बड़ी खिड़की थी। जहां से वृंदावन दिखता था। आज भगवान को वृंदावन की बहुत याद आ रही थी। उनका ध्यान यमुना तट पर पहुंच गया। भगवान टकटकी लगा कर देख रहे थे कि शायद कोई वृंदावन का यमुना तट पर दिख जाए। बहुत याद आती है तो लीला होती है। भगवान को वृंदावन से मथुरा आए कई वर्ष हो गए हैं। यमुना तट से कुछ ग्वाले गाय लेकर जा रहे हैं। कृष्ण को आभास होता है कि उन ग्वालों संग वह भी गाय चराने यमुना तट पर आए हैं। भगवान जोर से आवाज लगाते हैं। मित्र रुको हम भी आ रहे हैं। जब ध्यान आता है कि हम तो मथुरा में बैठे हैं। तो भगवान रोने लगते हैं। रोते–रोते हिचकियां बंध जाती हैं। उद्धव दौड़कर आते हैं। कहते हैं प्रभु आप रो रहे हैं। आप तो दुख से परे हैं। कृष्ण कहते हैं आज वृंदावन की बड़ी याद आ रही है। यशोदा मैया के साथ जब तक रहा। उनके घर केवल उलाहना आई। फिर भी उनका प्रेम घटने के बजाय और बढ़ता गया। एक बार गाय चराकर देर से घर पहुंचा। मैया रोने लगी। बोली जल्दी आया करो। आज कितने दिन हो गए। मैया कैसे रहती होगी। नंद बाबा कैसे होंगे। नंद बाबा अपने पैरों में जूतियां कभी नहीं पहनते थे। नंगे पैर निकल जाते थे। जब मैं अपने सिर पर रखकर जूतियां लाता तब नंदबाबा पहनते। यशोदा मैया कहती गोपियाँ बड़ी गरीब हैं। दही माखन बेंचकर ही उनका खर्च चलता है। उनके यहां चोरी न किया कर। जब मैं गोपियों के घर कई दिनों तक चोरी करने नहीं गया तो सारी गोपियां मिलकर आ गई मैया के पास। बोली कान्हा क्या केवल तुम्हारा बेटा है। इनको चोरी करने दो। मटका फोड़ने दो। वह जब तक साथ है मुझे किसी चीज की कोई चिंता नहीं। कृष्ण बोले सबसे ज्यादा दुख मैंने अपनी राधा को दिया। राधे राधे कह कर रोने लगे। उद्धव पर जरा सा भी असर नहीं पड़ा। बोले प्रभु इतना ही था तो आप अनपढ़ गवार लोगों को ज्ञान से समझा सकते थे। वह कहां गुरुकुल गए। उन्हें कहां ज्ञान है। कृष्ण ने कहा कि मैं तो उन्हें ना समझा सका। तुम जाकर उन्हें समझाओ। मां यशोदा, नंद बाबा, राधा और गोपियों को समझाओ।

कृष्ण ने वृंदावन जाते समय उद्धव को अपने

॥ देवि पूजि पद कमल तुम्हारे। सुर नर मुनि सब होंहिं सुखारे।। ॥

सारे वस्त्र, आभूषण और कुंडल पहना दिए। उद्धव वृंदावन पहुंच गए। गोपियों से पूछा कि नंद बाबा का घर किधर है। गोपियों ने कहा यह जो पानी की धारा दिख रही है। यह अश्रुजल है। यह धारा ठीक नंद बाबा के घर से निकली है। उद्धव नंद बाबा के घर पहुंचते हैं। आवाज लगाते हैं। बताते हैं कृष्ण का संदेश लेकर आया हूं। नंदबाबा निकलते हैं। दुबला पतला शरीर, धीमी आवाज। भगवान ने नंद बाबा का जो हुलिया बताया था। उससे बिल्कुल अलग दिखे नंद बाबा। नंद बाबा ने कहा बैठो भोजन लेकर आता हूं। उद्धव देखते हैं रसोईघर में जाला लग गया है।

जैसे बहुत दिनों से खाना नहीं बना। कहीं से लाकर नंदबाबा उद्धव को भोजन कराते हैं। यशोदा मैया की नजर उद्धव पर पड़ती है। यशोदा मैया कहती है कहां गया मेरा कान्हा। जब रोता था तो मैं बड़े से बड़े काम छोड़ कर उसे गोद ले लेती थी। अब मैं उसकी याद में रोज रो रही हूं। वह ध्यान नहीं दे रहा है। देवकी ने तो कहा था यशोदा मैं धन्य हूं तुम्हारे लालन–पालन से। देवकी ने पूछा यशोदा से कि तू तो कहती थी तेरा बेटा बड़ा चंचल है। लेकिन मैंने तो उन्हें मथुरा में मुस्कुराते भी नहीं देखा। तुमने बताया था कि उसे गोरस बड़ा प्रिय है। एक दिन मैंने उसे गोरस की मिठाई बनाकर दी तो उसने कहा कि मैया मेरे भोजन में गोरस कभी मत देना। मुझे वृंदावन की याद आती है। यशोदा मैया की याद आती है। नंद बाबा उद्धव को बताते हैं यशोदा पागलों की तरह घूमती है। गोपियों से पूछती है कि तुमने कहीं मेरे लाल को बांधकर तो नहीं रखा है। गोवर्धन पर्वत से पूछती है मेरा कान्हा कहां गया। आप सौभाग्यशाली हैं जो कहते हैं कि कृष्ण परमपिता विष्णु के अवतार हैं। उनकी लीला थी कि हमारे घर आ गए। नंद बाबा कहते हैं कि मैंने कृष्ण को भूख से रोते हुए देखा है। यशोदा से भोजन के लिए गिड़गिड़ाते देखा है। मेरा बेटा चोरी करता है। बात बात पर झूठ बोलता है। मुझसे गलती हो गई यह बात तो ठीक है। लेकिन कृष्ण तो भगवान हैं। मैंने उसे बेटा कहा ठीक। लेकिन उसने भी तो मुझे बाबा कहा। नंद बाबा कहते हैं कि तुम ज्ञानी हो। कुछ भी जीवन में विपरीत हो जाए किसके भरोसे रहोगे। बहुत से लोगों के बेटे छोड़ देते हैं। वे भगवान के भरोसे रह लेते हैं। मैंने भगवान के भरोसे जीना सीख

लिया था। अब तो तुम कह रहे हो कि कृष्ण ही भगवान है। तो भगवान भी मुझे छोड़ कर चला गया। मैंने कितने पाप किए होंगे कि भगवान भी हमारा घर छोड़ कर चले गए। अब हम किसके सहारे जिएं।

उद्धव नंद बाबा के घर से निकलकर गोपियों के घर पहुंचते हैं। गोपियों ने उद्धव को देखते ही कहा कृष्ण ने तुमको भेजा है। हमें अपना वैभव दिखाने के लिए। मुझे ऐश्वर्य दिखा रहे हैं कि वह राजा बन गए हैं। उद्धव बोले कि कृष्ण ने आपके लिए संदेश भेजा है ज्ञान मार्ग पर चलो। गोपियां कहती हैं ज्ञान से क्या होगा। उद्धव कहते हैं कि कल्याण होगा। स्वर्ग मिलेगा। गोपियां कहती हैं कि मैं ठोकर मारती हूं ऐसे स्वर्ग को। कृष्ण प्रेम में नर्क में रहने के लिए तैयार हूं। आप कहते हैं कि कृष्ण को छोड़कर ज्ञान मार्ग में मन लगाओ। दिल तो दिया है कृष्ण को। संसार में कौन सा ऐसा कौन सा रिश्ता है जो जीवन भर बना रहे। प्रेम का रिश्ता। स्वार्थ का रिश्ता मतलब का होता है। स्वार्थ पूरा प्रेम खत्म। जो प्रेम निस्वार्थ होगा वह जीवन भर रहेगा। अचानक गोपियां कहती हैं कि हो सकता है कि कंस को मारने के बाद मथुरा में भोज हो। वहां राक्षस रहते हैं। चलो हम तैयार हैं उनके मामा की तेरहवीं में भांजा कृष्ण जरूर रहेगा। जब लोग हमें खाएंगे तो भांजे की नजर हम पर पड़ ही जाएगी। जीवन धन्य हो जाएगा। जहां मेरे पिया हैं वहां का खाना बनने के लिए भी गोपियाँ तैयार हैं। उद्धव ने देखा कि जो गोपियां अभी कृष्ण पर क्रोधित हो रही थीं अब कृष्ण दर्शन के लिए अपने प्राण भी देने के लिए तैयार हैं। ■

॥ देवि पूजि पद कमल तुम्हारे। सुर नर मुनि सब होंहिं सुखारे।। ॥

स्तुति

श्रीराम जय राम जय जय राम।
श्रीराम जय राम जय जय राम।
श्रीराम जय राम जय जय राम।
श्रीराम जय राम जय जय राम।

हे रघुनन्दन् हे राघव, हे जगन्नाथ, हे मुरलीधर, हे सीताराम, कमल नयनो से सदैव मेरा मन मोहने वाले अवधबिहारी, अपने चरणों में हमारा प्रणाम स्वीकार करे। –1

हे राधेश्याम, हे गिरीधर, हे बाँकेबिहारी, हे मधुसूदन, हे केशव शरणागत को सदैव क्षमा करने वाले हे जगदीश्वर, अपने चरणो में हमारा प्रणाम स्वीकार करे। –2

हे पद्मनाभ, आप जैसे सूर्य चन्द्र तथा अन्य नक्षत्रों को प्रकाशित करते है वैसे ही हमे अपने स्वरूप का प्रकाश देकर, अपने चरणो में हमारा प्रणाम स्वीकार करे। –3

हे रघुवीर आपकी जिस माया शक्ति से सम्पूर्ण सृष्टि भ्रमित है उस अज्ञान रूपी हमारे भ्रम को दूर करके, अपने चरणो मे हमारा प्रणाम स्वीकार करे। –4

हे राजा राम जिस प्रकार आपके राज्य में सभी जीव धारी अभय पाते है उसी प्रकार हमे अपना चरण दास मान कर, अपने चरणो में हमारा प्रणाम स्वीकार करे। –5

हे पार्थसारथी, जिस तरह आपने पार्थ को स्नेह एवं भक्ति–ज्ञान दिया वही स्नेह और ज्ञान हमें निष्पक्ष रूप से देकर, अपने चरणो में हमारा प्रणाम स्वीकार करे। –6

हे मुक्तिनाथ, काम, क्रोध, लोभ, मोह, अज्ञानता, गुण–अवगुण इत्यादि सभी लक्षणों को एवं धर्म, अर्थ, काम मोक्ष इत्यादि सभी इच्छाओ को स्वयं हमारे सहित अपने चरणों में प्रणाम के साथ स्वीकार करे। –7

हे जानकीवल्लभ, हम आपसे ही उत्पन्न होकर आपके द्वारा पोषित होकर, आप में ही विलीन हो जायेगे, अतः अपने चरणो में हमारा प्रणाम स्वीकार करे। –8

हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

प्रतिष्ठा पांडे व मयंक पांडे

देवि पूजि पद कमल तुम्हारे। सुर नर मुनि सब होंहिं सुखारे।।

महाशिवरात्रि पर शिव-पार्वती विवाह कर महिलाओं ने फूलों की होली खेली

महाशिवरात्रि पर्व पर अहमदाबाद वस्त्रपुर क्षेत्र की महिला संगठनों ने कलश यात्रा निकाली और धूमधाम से पार्वती–शंकर विवाह पूर्ण विधि विधान से सम्पन्न हुआ। गौर दस जी महाराज द्वारा चैतन्य महाप्रभु की कथा अहमदाबाद में 14 फरवरी से 20 फरवरी 2023 को सम्पन्न हुई। हम सभी ने शिव–पार्वती के विवाह का भी उत्सव किया और फूलों की होली खेली। अहमदाबाद के वस्त्रपुर क्षेत्र के सनराइज़ पार्क में प्रेम सिंघल और संस्था श्याम सखी ने यह कार्यक्रम आयोजित किया। कार्यक्रम में मधु अग्रवाल, मधुलिका गर्ग, मनीषा चाचन, संगीता राठी, सुमन अग्रवाल, मधुलिका जिंदल, हेमा चौधरी, पिंकी अग्रवाल, प्रियंका जैन, रचना अग्रवाल, वीणा जुईवाला, मधु गुप्ता, आरती अग्रवाल, कविता मित्तल, ममता अग्रवाल, नीतू गोईनक व अनिता अग्रवाल आदि शामिल रहीं। ■

प्रस्तुति: प्रेम सिंघल, अहमदाबाद, गुजरात

॥ देवि पूजि पद कमल तुम्हारे। सुर नर मुनि सब होहिं सुखारे।। ॥

दिल्ली मे विराजे बाबा नीब करौरी महाराज

दिल्ली के मानसतीर्थ श्री गौरीशंकर मन्दिर अशोक विहार फेज–4, में हनुमत् स्वरूप बाबा नीब करौरी महाराज जी के विग्रह का प्राण प्रतिष्ठा समारोह आयोजित किया गया। प्राण प्रतिष्ठा की वजह से 11 फरवरी, 2023, शनिवार का दिन इतिहास के रूप मे जाना जाएगा. जौनापुर के बाद भक्तों द्वारा दिल्ली में स्थापित श्रीमहाराज जी का यह पहला मन्दिर है. यह मंदिर जिस स्थान पर स्थापित किया गया है, वहाँ पिछले 17 साल से लगातार श्रीरामचरितमानस का पाठ हो रहा है। इस मन्दिर में सभी देवी–देवताओं के विग्रह पहले से स्थापित हैं। मन्दिर परिसर में सकारात्मक ऊर्जा का भरपूर संचार है। श्री महाराज जी से जुड़े सभी भक्त अपने क्षेत्र में श्री महाराज जी की मूर्ति लगने से बहुत प्रसन्न है। यह पुनीत कार्य आचार्य महेंद्र चतुर्वेदी महाराज के सानिध्य में मुख्य यजमान बबलेश पंडित द्वारा संपन्न हुआ। श्री मन्दिर व श्री महाराजजी से जुड़े सभी भक्तों ने तन – मन से सेवा करते हुए हर्षोल्लास के साथ इस पावन कार्य को मूर्त रुप दिया। सारा पवित्र स्थल जय श्री राम, जय बाबा नीब करौरी महाराज की, जय गुरुदेव के उद्‌घोष से गुंजायमान रहा।

सभी पंडित व ब्राह्मणों ने सस्वर मंत्रोच्चारण से स्थान को अलौकिक अध्यात्म से परिपूर्ण कर दिया। मन्दिर जी के भक्तों में सर्वश्री मनोज गुप्ता, राजेंद्र स्वामी, अनिल कुमार सन्नी, बबली शर्मा, सुशील मलिक, एस. बी.पांडेय, राजीव शर्मा, राजू प्रधान ओम प्रकाश शर्मा अमृत लाल आदि उपस्थित रहे।

श्रेयांस जैन
दिल्ली
मो.: 9810654803

दिल्ली में ही श्री महाराजजी की सेवा में लगे Love Serve Feed Trust (Regd.) के सदस्यों ने भी प्राण प्रतिष्ठा में सक्रिय भूमिका निभाई। इसमें श्रेयांस जैन, प्रवीण रस्तोगी, राजकुमार शर्मा, अवनीश बंसल, आशीष रस्तोगी, आकाश रस्तोगी, मिकी सचदेवा, नैनी सचदेवा शामिल रहे. श्री महाराज जी के अन्य भक्तों में रास बिहारी खन्ना, विनीता खन्ना, सुनील, पूनम, राकेश कोहली, अजय अग्रवाल,पूजा गुप्ता, विकास गुप्ता, सार्थक, विजय गुप्ता प्रमुख हैं। आयोजन के समापन पर आचार्य महेंद्र चतुर्वेदी महाराज ने ट्रस्ट के अध्यक्ष श्रेयांश जैन व सभी सदस्यों का आभार व्यक्त किया। ■

॥ देवि पूजि पद कमल तुम्हारे। सुर नर मुनि सब होंहिं सुखारे।। ॥

साधना के समय आध्यात्मिक ज्ञान

सिद्ध कुंजिका स्तोत्र के पाठ से लाभ

धन लाभः जिन लोगों को सदा धन का अभाव रहता हो,लगातार आर्थिक नुकसान हो रहा हो ,बेवजह के कार्यों में धन खर्च हो रहा हो उन्हें कुंजिका स्तोत्र के पाठ से लाभ होता है,धन प्राप्ति के नए मार्ग खुलते हैं। धन संग्रहण बढ़ता है।

शत्रु मुक्तिः 'शत्रुओं से छुटकारा पाने और मुकदमों में जीत के लिए यह स्तोत्र किसी चमत्कार की तरह काम करता है,नवरात्रि के बाद भी इसका नियमित पाठ किया जाए तो जीवन में कभी शत्रु बाधा नहीं डालते, कोर्ट–कचहरी के मामलों में जीत हासिल होती है, साधना का समय ब्रह्ममूहुर्त 4:25 बजे के बाद और 5:15 बजे के बीच पूर्ण हो जाए, सायंकाल 7:30 बजे से 9:बजे के बीच,,रात्रि में 11:बजे से 12:बजे के बीच दीपक जलाकर करना होता है,माँ के सामने, और लाल आसन, लाल वस्त्र और लाल पुष्प।

रोग मुक्तिः दुर्गा सप्तशती के संपूर्ण पाठ जीवन से रोगों का समूल नाश कर देते हैं,कुंजिका स्तोत्र के पाठ से न केवल गंभीर से गंभीर रोगों से मुक्ति मिलती है, बल्कि रोगों पर होने वाले खर्च से भी मुक्ति मिलती है।

कर्ज मुक्तिः यदि किसी व्यक्ति पर कर्ज चढ़ता जा रहा है, छोटी–छोटी जरूरतें पूरी करने के लिए कर्ज लेना पड़ रहा है, तो कुंजिका स्तोत्र का नियमित पाठ जल्द कर्ज मुक्ति करवाता है।

श्री श्री मनु जी महाराज
श्री पीताम्बरा सिद्ध पीठ
जेवर, उत्तर प्रदेश
मो.: 9773943906

सुखद दांम्पत्यः जीवन दांपत्य जीवन में सुख–शांति के लिए कुंजिका स्तोत्र का नियमित पाठ किया जाना चाहिए,परिवार के प्रति आकर्षण प्रभाव बढ़ाने के लिए भी इसका पाठ किया जाता है, ताकि परिवार में आपस में प्रसन्नता बनी रहे।

|| देवि पूजि पद कमल तुम्हारे। सुर नर मुनि सब होंहि सुखारे।। ||

पिछले अंक शेष

गार्ड, टिकट चेकर और इंजन ड्राइवर तीनों को स्टीम इंजन की मशीनरी से जूझते हुए लगभग तीन घन्टे बीत चुके थे। रेलगाड़ी एक छोटे से हॉल्ट स्टेशन पर खड़ी थी। सभी यात्री परेशान हो गए थे कि पूरी कोशिश के बावजूद गाड़ी के पहिये जैसे के तैसे अपनी जगह पर अड़े हुए थे।
हनुमत कृपा

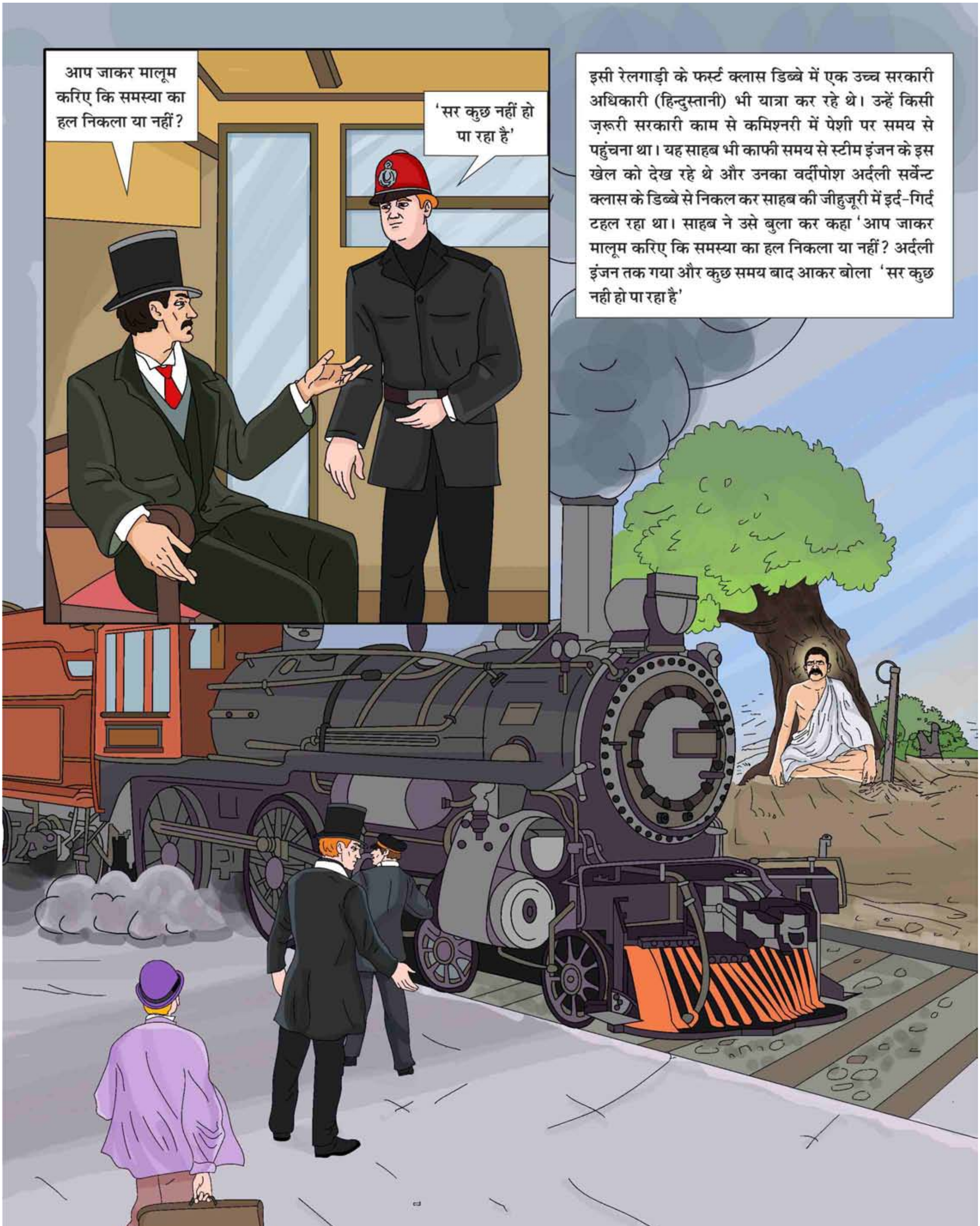
इसी रेलगाड़ी के फर्स्ट क्लास डिब्बे में एक उच्च सरकारी अधिकारी (हिन्दुस्तानी) भी यात्रा कर रहे थे। उन्हें किसी ज़रूरी सरकारी काम से कमिश्नरी में पेशी पर समय से पहुंचना था। यह साहब भी काफी समय से स्टीम इंजन के इस खेल को देख रहे थे और उनका वर्दीपोश अर्दली सर्वेन्ट क्लास के डिब्बे से निकल कर साहब की जीहुजूरी में इर्द-गिर्द टहल रहा था। साहब ने उसे बुला कर कहा 'आप जाकर मालूम करिए कि समस्या का हल निकला या नहीं? अर्दली इंजन तक गया और कुछ समय बाद आकर बोला 'सर कुछ नही हो पा रहा है'
आप जाकर मालूम करिए कि समस्या का हल निकला या नहीं?
'सर कुछ नहीं हो पा रहा है'

© maharajjibaba.com

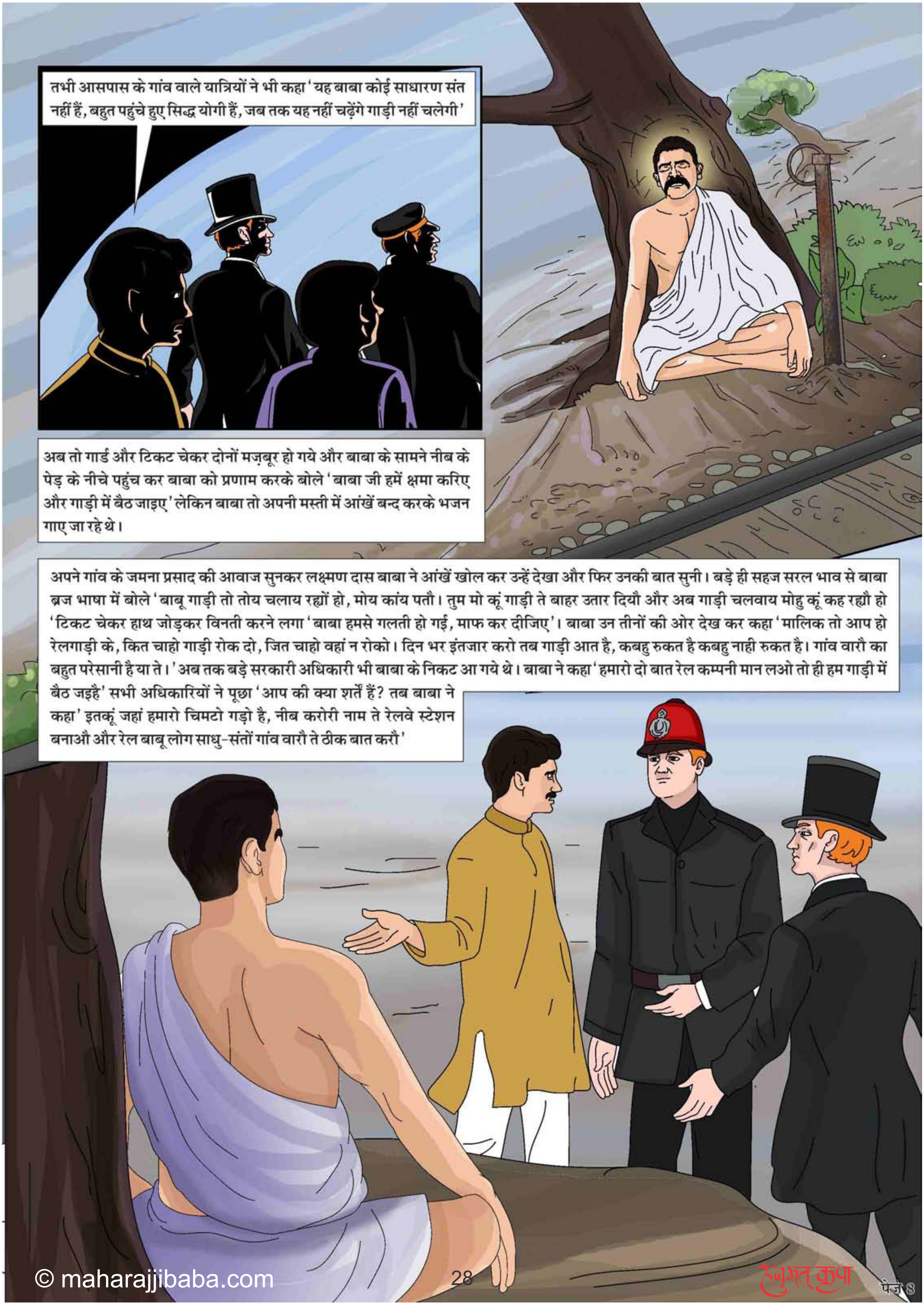

© maharajjibaba.com

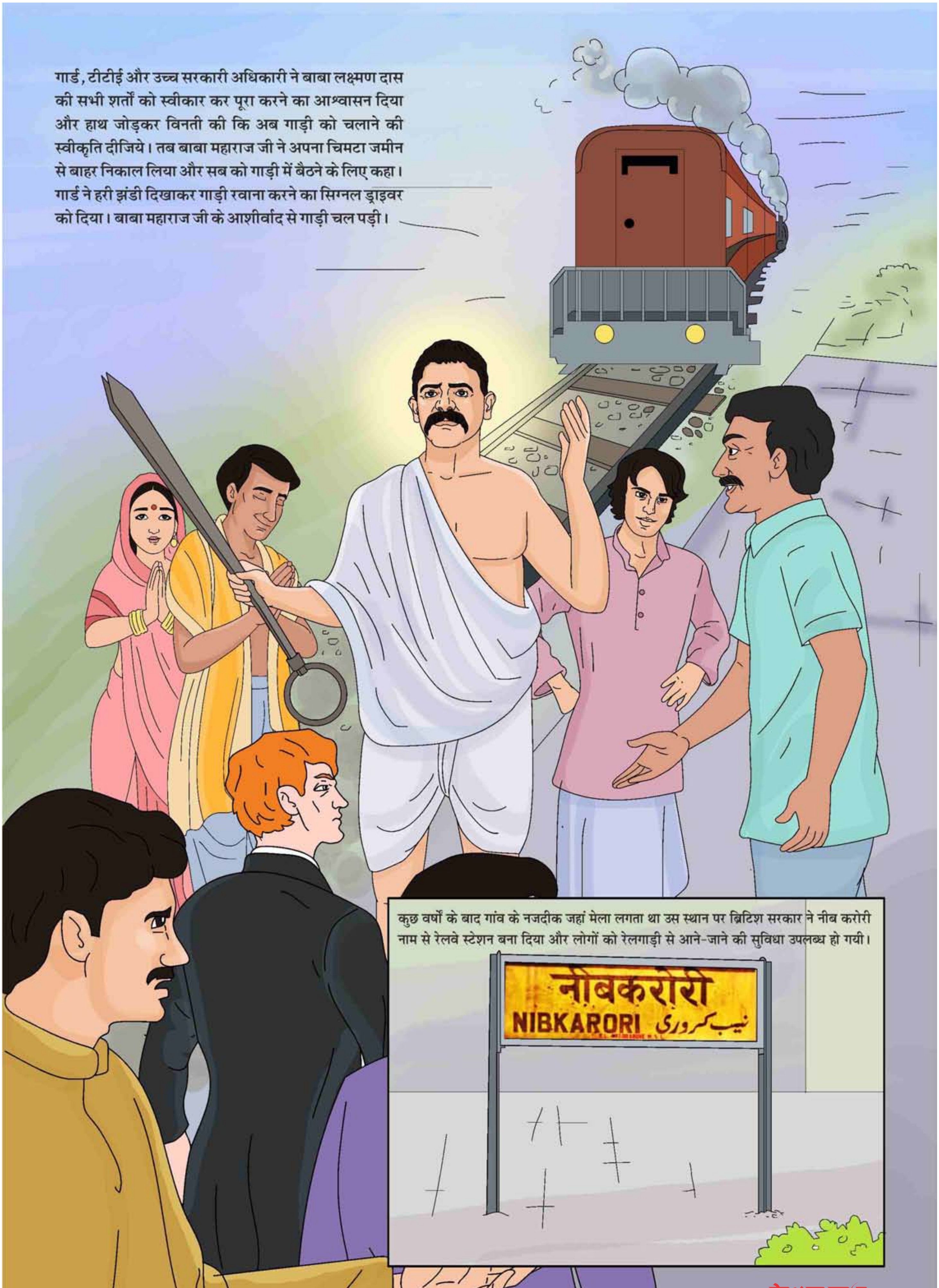
गार्ड, टीटीई और उच्च सरकारी अधिकारी ने बाबा लक्ष्मण दास की सभी शर्तों को स्वीकार कर पूरा करने का आश्वासन दिया और हाथ जोड़कर विनती की कि अब गाड़ी को चलाने की स्वीकृति दीजिये। तब बाबा महाराज जी ने अपना चिमटा जमीन से बाहर निकाल लिया और सब को गाड़ी में बैठने के लिए कहा। गार्ड ने हरी झंडी दिखाकर गाड़ी रवाना करने का सिग्नल ड्राइवर को दिया। बाबा महाराज जी के आशीर्वाद से गाड़ी चल पड़ी।
कुछ वर्षों के बाद गांव के नजदीक जहां मेला लगता था उस स्थान पर ब्रिटिश सरकार ने नीब करोरी नाम से रेलवे स्टेशन बना दिया और लोगों को रेलगाड़ी से आने-जाने की सुविधा उपलब्ध हो गयी।
नीबकरोरी
NIBKARORI
نیب کروری

दक्षिण भारत में हनुमान जी

दक्षिण भारत में हनुमान जी को आंजनेय भगवान के नाम से जाना और पुकारा जाता है। हनुमान जी पवन देवता और अंजना माई के पुत्र हैं इसलिए उन्हें आंजनेय भगवान के रूप में पूजा जाता है। दक्षिण भारत में हनुमान जी के बहुत से मंदिर हैं, जिनमें प्रमुख मंदिर यह हैं :

आंजनेय हनुमान मंदिर नंगनल्लूर: नांगनल्लूर, चेन्नई में अंजनेय मंदिर एक हिंदू मंदिर है जो भगवान हनुमान को समर्पित है। हनुमान की मुख्य मूर्ति 32 फीट लंबी है और

ग्रेनाइट के एक टुकड़े (Single Stone) से तराशी गई है, जो पुडुचेरी के पास पंचवटी के बाद दूसरी सबसे ऊंची हनुमान मूर्ति है।

मूर्ति को 1989 में स्थापित किया गया था और 1995 में प्रतिष्ठित किया गया था। श्री मारुति भक्त समाज ट्रस्ट, जिसमें उच्च आध्यात्मिक विश्वास वाले लोग शामिल थे, ने इस मंदिर की कामना की। कांची मठ के श्री चंद्रशेखरेंद्र सरस्वती महास्वामीजी ने 1989 में अंजनेयार की 32 फुट की मूर्ति को स्थापित किया और 1995 में कुंभाभिषेकम का समापन किया। 32 फीट की

मूर्ति का विशिष्ट कारक यह है कि इसे एक ही चट्टान से ढाला गया था।

मुख्य तीर्थस्थल में 90 फीट ऊंचे टेंपल टॉवर के अंदर अंजनेय है। आंजनेया का मुख पश्चिम की ओर है, और इस प्रकार मुख्य प्रवेश द्वार पश्चिम की ओर है। मंदिर के त्योहारों के दौरान उपयोग किए जाने वाले दक्षिणी हिस्से में एक सहायक प्रवेश द्वार है। मुख्य मंदिर भवन में गर्भगृह के चारों ओर रास्ते हैं और भक्तों के लिए पूजा करने के लिए देवता के सामने इकट्ठा होने के लिए एक बड़ा ढका हुआ स्थान (मंडपम) भी है।

उत्तर–पश्चिम कोने पर, भगवान राम के लिए एक पूर्ण सन्निधि का निर्माण किया गया है और यहाँ उन्होंने हनुमानजी के साथ सीता और लक्ष्मण के साथ निवास किया है। देवताओं का मुख पूर्व की ओर है। रक्षक और शासक के रूप में राम की भूमिका यहाँ दर्शाई गई है क्योंकि राम को अपना धनुष ले जाते हुए देखा जाता है, इसलिए यहाँ भगवान के लिए "कोदंडा राम" नाम दिया गया है।

दक्षिण–पश्चिम में, रुक्मिणी और सत्यभामा के साथ भगवान कृष्ण के लिए एक सन्निधि का निर्माण किया गया है, जिसका मुख पूर्व की ओर है। ■

प्रस्तुति–चंद्र शेखर शर्मा (व्यवसायी) चेन्नई

||| देवि पूजि पद कमल तुम्हारे। सुर नर मुनि सब होहिं सुखारे।। |||

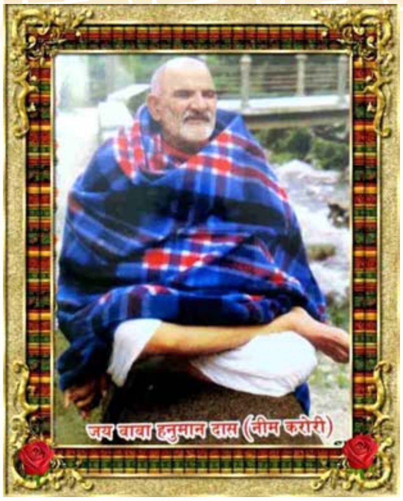

बीते दिनों आगरा में आयोजित एक मांगलिक कार्यक्रम में पूज्य बाबा नीब करौरी महाराज के अनन्य भक्त ओम स्वरूप गर्ग, सुमन गर्ग, मनोज गर्ग, मीना गर्ग व उनके परिवारीजनों ने गुरुदेव महाराज के चित्र पर माल्यार्पण कर आशीर्वाद लिया। शहर के नामचीन होटल में आयोजित समारोह में मशहूर भजन गायक पं. मनीष शर्मा ने 'बाबा आपके सहारे मेरा परिवार पल रहा है, तेरी दया का दीपक मेरे आँगन में जल रहा है' गीत गाकर मौजूद बाबा जी के भक्तों को मंत्रमुग्ध कर दिया।

||| देवि पूजि पद कमल तुम्हारे। सुर नर मुनि सब होंहि सुखारे।। |||

करोलबाग हनुमान मंदिर में बाबा जी के चित्र का अनावरण छह अप्रैल को

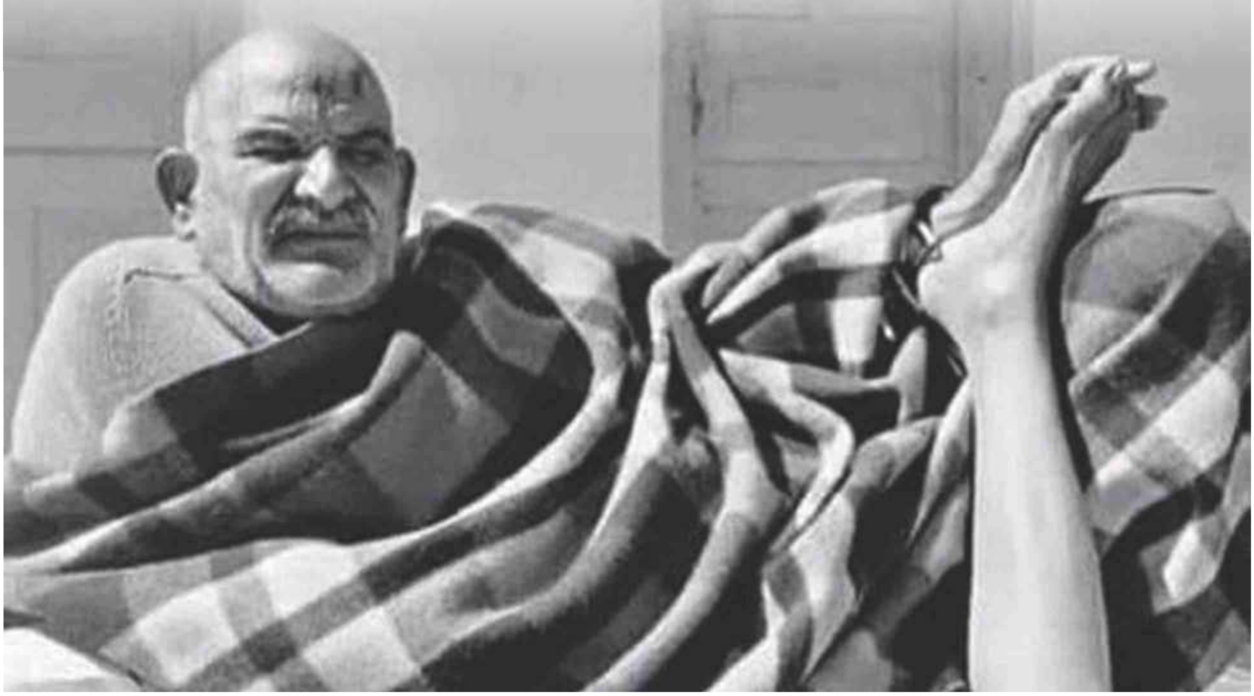

श्री सिद्ध हनुमान मंदिर, 108 फुट श्री संकट मोचन धाम झंडेवालान, करोलबाग, नई दिल्ली में बीती 15 फरवरी को "संस्कृति संज्ञान" द्वारा 'भारतीय पुजरियों की दशा एवं दिशा' विषय पर कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें आसपास के बहुत से पुजारियों को आमंत्रित किया गया। कुछ पुजारियों को समाज के प्रति उनके उत्कृष्ट कार्यों के लिए सम्मानित भी किया गया। कार्यक्रम में आये विशिष्ट अतिथियों ने सनातन धर्म से जुड़ी विशेष जानकारियां दी। पुजारियों के प्रति अपनी जिम्मेदारी को व्यक्त किया। पुजारियों को मिलने वाली सुविधाओं की भी चर्चा की जिससे उनके परिवार का उचित पालन पोषण हो सके। उनके बच्चे उचित शिक्षा ग्रहण कर सकें जिससे उनके बच्चों का भविष्य उज्जवल हो।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि संतोष तनेजा, अति विशिष्ट अतिथि सुरेंद्र पाल सिंह, मार्गदर्शक महंत ओम प्रकाश गिरि महाराज, विशिष्ट अतिथि वासुदेव गर्ग, भरत कुमार, मृत्युंजय एवं उदय कौशिक और निवेदक डॉ पी के सिंघल, आर सी बंसल एवं संजय राय रहे। सभी वक्ताओं ने सनातन हिन्दू धर्म की नींव को और मजबूत करने पर बल दिया। सभी पुजारियों को श्रीरामचरित मानस पढ़ने व पढ़ाने के लिए प्रेरित करने के लिए आग्रह किया गया। कार्यक्रम में यह भी जानकारी दी गयी कि आगामी छह अप्रैल, 2023 को श्री हनुमान जन्मोत्सव पर मन्दिर की ओर से श्री हनुमान जी पर एक पुस्तक का विमोचन होगा। साथ ही श्री हनुमान जी के अनन्य भक्त, हनुमत स्वरूप ब्रह्मलीन बाबा नीब करौरी महाराज जी के चित्र का अनावरण होगा। सभी भक्त इस पुनीत कार्य में उपस्थित होने के लिए आमंत्रित हैं। ■

श्री ओम प्रकाश गिरी
प्रधान महंत
श्री सिद्ध हनुमान मंदिर,
झंडेवालान, नई दिल्ली।
मो.: 9818194765

॥ देवि पूजि पद कमल तुम्हारे। सुर नर मुनि सब होंहिं सुखारे।। ॥

कैंची धाम हमारे लिए सर्वश्रेष्ठ

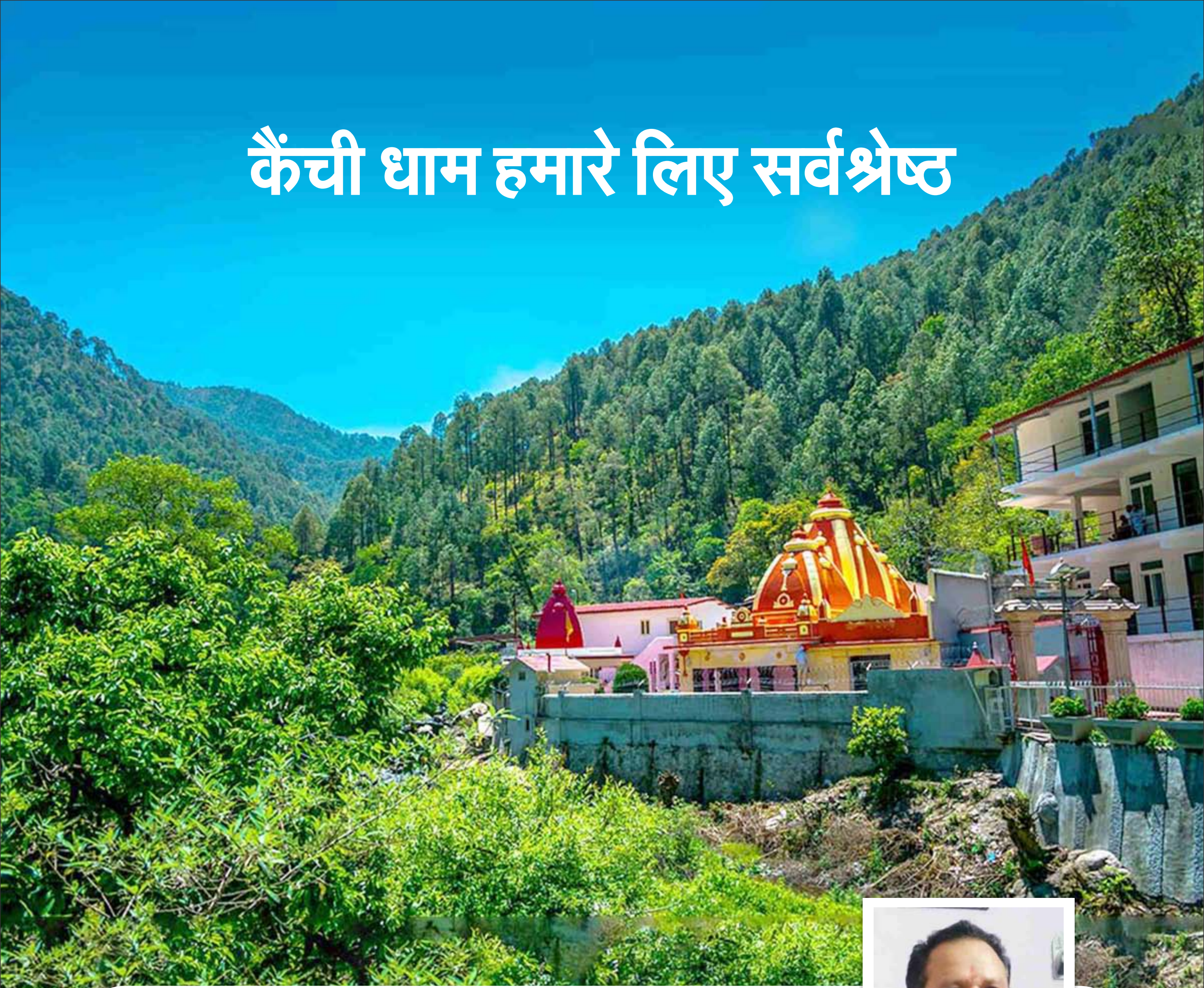

कैंची धाम हमारे लिए सर्वश्रेष्ठ, सर्वोपरि है और गुरु देव के द्वारा हमको जो उपहार प्रदान किया है वह अद्‌भुत है उसका वर्णन करना इस समय सम्भव नही है लेकिन फिर कभी गुरु देव का आदेश मिला तो आपसे जरुर वर्णन करूंगा। श्री माँ के साथ हमारा अनुभव भी अद्‌भुत और आश्चर्यजनक रहा है कैंची धाम में श्री माँ के दरबार में या मन्दिर में जो आभास हमको सर्वप्रथम हुआ वह अद्‌भुत था। उस स्थान पर जाते ही बस आवाज बंद और मन के अन्दर से अनेकों आवाज मन को प्रसन्नता देने वाली शान्ति। वह मारबल का पत्थर और माँ की तस्वीर या कहो साक्षात् माँ हमसे कुछ कह रही है और हमारी हरकतों उठना बैठना सोचना, क्या हम देख रहे हैं क्या सोच रहे हैं सब पर माँ की नजरें थी। हमारे कानों में अजीब सी अनुभूति हो रही थी और इस प्रकार महसूस हो रहा था जैसे अनेकों किरणें हमारे शरीर में समा रही हों और अन्त में जब हम बाहर जाने को निकले तो बाहर आ कर फिर अचानक अन्दर जाने का मन किया और कुछ सेकंड अन्दर जा कर बाहर आ गये। अन्दर बैठे लोगों को भी हमने बाहर से ही देखा अन्दर हमारा ध्यान उन पर गया ही नहीं। ■

विनोद जोशी
पिथौरागढ़
मो.: 9012965545

देवि पूजि पद कमल तुम्हारे। सुर नर मुनि सब होंहिं सुखारे।।

राम दास (जन्म नाम रिचर्ड एल्पर्ट)

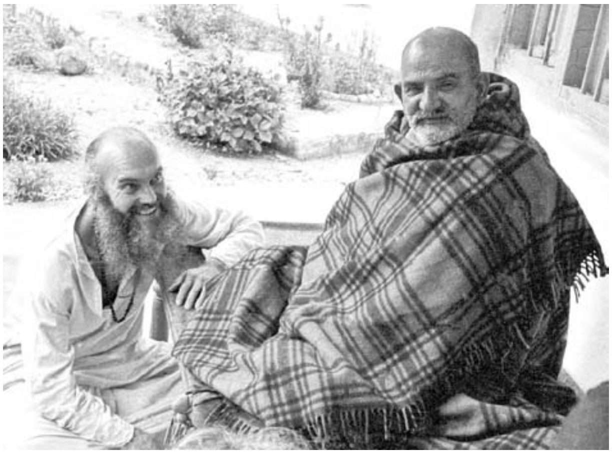

इंजी. विजय शर्मा
गुड़गाँव, दिल्ली एनसीआर
मो.: 8447745571

राम दास (जन्म रिचर्ड एल्पर्ट; 6 अप्रैल, 1931 – 22 दिसंबर, 2019), जिन्हें बाबा राम दास के नाम से भी जाना जाता है, एक अमेरिकी आध्यात्मिक शिक्षक, आधुनिक योग के गुरु, मनोवैज्ञानिक और लेखक थे। उनकी सबसे ज्यादा बिकने वाली 1971 की किताब 'बी हियर नाउ' है, जिसे कई समीक्षकों ने "सेमिनल" के रूप में वर्णित किया है, राम दास ने पश्चिम में पूर्वी आध्यात्मिकता और योग को लोकप्रिय बनाने में मदद की। उन्होंने अगले चार दशकों में आध्यात्मिकता पर बारह और पुस्तकों का लेखन या सह–लेखन किया, जिनमें ग्रिस्ट फॉर द मिल (1977), हाउ कैन आई हेल्प? (1985), और पॉलिशिंग द मिरर (2013) शामिल हैं।

राम दास का जन्म 1931 में रिचर्ड एल्पर्ट के रूप में हुआ था। उनके माता–पिता गर्ट्रूड (लेविन) और बोस्टन में एक वकील जॉर्ज एल्पर्ट थे। वह अपने शुरुआती जीवन में खुद को नास्तिक मानते थे। 1973 में बर्कले कम्युनिटी थिएटर में बोलते हुए उन्होंने कहा, "मेरी यहूदी यात्रा मुख्य रूप से राजनीतिक यहूदी धर्म थी, मेरा मतलब है कि मैं कभी भी बार मिट्ज्वाहेड नहीं था, पुष्टि की, और इसी तरह, खुद को "धर्म के आदी" के रूप में वर्णित करते हुए, जब तक मैंने साइकेडेलिक्स नहीं लिया, तब तक मेरे पास भगवान का एक झोंका नहीं था। न्यूयॉर्क के राइनबेक में ओमेगा इंस्टीट्यूट में आर्थर जे. मगिदा द्वारा उनका साक्षात्कार भी लिया गया था, जिन्होंने 2008 में राम दास को उद्धृत करते हुए साक्षात्कार प्रकाशित किया था, "मुझे अपने 'बार मिट्ज्वा' के बारे में सबसे ज्यादा याद है कि यह एक खाली अनुष्ठान था। यह था सपाट। बिल्कुल सपाट। पल भर के लिए एक निराशाजनक खोखलापन था। मेरे दिल के लिए इसमें कुछ भी नहीं था, कुछ भी नहीं था।

एल्पर्ट ने विलिस्टन नॉर्थम्प्टन स्कूल में अध्ययन किया, 1948 में सह प्रशंसा स्नातक की उपाधि प्राप्त की। उन्होंने 1952 में टफ्ट्स विश्वविद्यालय से मनोविज्ञान में कला स्नातक की डिग्री हासिल की। उनके पिता चाहते थे कि वे मेडिकल स्कूल जाएं, लेकिन टफ्ट्स में रहते हुए उन्होंने इसके बजाय मनोविज्ञान का अध्ययन करने का फैसला किया। 1954 में वेस्लेयन विश्वविद्यालय से मनोविज्ञान में अपनी मास्टर डिग्री हासिल करने के बाद, वेस्लेयन में उनके गुरु डेविड मैक्लेलैंड ने एल्पर्ट को स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय के लिए सिफारिश की। एल्पर्ट ने "उपलब्धि चिंता" पर डॉक्टरेट की थीसिस लिखी, 1957 में स्टैनफोर्ड से मनोविज्ञान में पीएचडी प्राप्त की। एल्पर्ट ने स्टैनफोर्ड में एक वर्ष के लिए पढ़ाया, और मनोविश्लेषण पर काम शुरू किया।

मैकक्लेलैंड हार्वर्ड विश्वविद्यालय में पढ़ाने के लिए कैम्ब्रिज, मैसाचुसेट्स चले गए, और 1958 में एक सहायक नैदानिक मनोविज्ञान प्रोफेसर के रूप में एल्पर्ट को एक कार्यकाल–ट्रैक स्थिति स्वीकार करने में मदद की। एल्पर्ट ने सामाजिक संबंध विभाग, मनोविज्ञान विभाग, ग्रेजुएट स्कूल ऑफ एजुकेशन और स्वास्थ्य सेवा के साथ काम किया, जहां वे एक चिकित्सक थे। उन्होंने मानव प्रेरणा और व्यक्तित्व विकास में विशेषज्ञता हासिल की और बालकों पर अपनी पहली पुस्तक 'पहचान और बाल पालन' प्रकाशित की।

1960 के दशक की शुरुआत में राम दास व्यक्तिगत और पेशेवर रूप से हार्वर्ड विश्वविद्यालय में टिमोथी लेरी के साथ जुड़े थे। तब रिचर्ड एल्पर्ट के रूप

॥ देवि पूजि पद कमल तुम्हारे। सुर नर मुनि सब होंहिं सुखारे।। ॥

में जाना जाता था, उन्होंने साइकेडेलिक दवाओं के चिकित्सीय प्रभावों पर लेरी के साथ शोध किया। इसके अलावा, एल्पर्ट ने हार्वर्ड डिविनिटी स्कूल के स्नातक छात्र वाल्टर पहंके को उनके 1962 के "गुड फ्राइडे एक्सपेरिमेंट" में धर्मशास्त्र के छात्रों के साथ सहायता की, दवाओं का पहला नियंत्रित, डबल–ब्लाइंड अध्ययन और रहस्यमय अनुभव किया। जबकि यह उस समय अवैध नहीं था, परन्तु बाद में उनका शोध विवादास्पद हुआ और 1963 में हार्वर्ड से लेरी और एल्पर्ट की बर्खास्तगी का कारण बना।

1963 में एल्पर्ट, लेरी और उनके अनुयायी मिलब्रुक, न्यूयॉर्क में हिचकॉक एस्टेट में चले गए, जब IFIF की न्यूयॉर्क सिटी शाखा के निदेशक और मेलॉन की भाग्य उत्तराधिकारी पैगी हिचकॉक ने अपने भाई बिली के लिए IFIF को संपत्ति किराए पर देने की व्यवस्था की। एल्पर्ट और लेरी ने तत्काल हार्वर्ड साइलोसाइबिन परियोजना के पूर्व सदस्यों के साथ संपत्ति (आमतौर पर "मिलब्रुक" के रूप में जाना जाता है) में एक सांप्रदायिक समूह की स्थापना की, और 'आईएफआईएफ' को बाद में भंग कर दिया गया और 'कैस्टेलिया फाउंडेशन' नया नाम दिया गया (हरमन हेस्से के उपन्यास द ग्लास बीड गेम में बौद्धिक उपनिवेश के बाद)।

1967 में, रिचर्ड एल्पर्ट ने कई देशों की यात्रा की और भारत की राजधानी दिल्ली पहुंचे, वहां उन्हें भगवान दास मिले । रिचर्ड मानसिक रूप से कुछ परेशान थे । राम दास ने उन्हें गुरु बाबा नीम करोली महाराज जी से मिलने के लिए कहा लेकिन रिचर्ड ने कोई उत्सुकता नहीं दिखाई। राम दास रिचर्ड को लैंड रोवर कार में सड़क के रास्ते कैंची आश्रम पहुंचे। बाद में जब राम दास उनको ले कर बाबा नीब करौरी महाराजजी के सामने पहुंचे तब भगवान दास महाराज जी के सामने दंडवत प्रणाम किया लेकिन रिचर्ड चुपचाप खड़े रहे आश्चर्य से सब कुछ देखते रहे। तब बाबा ने रिचर्ड की और देख कर कहा "तुम तो मेरे पास आना ही नहीं चाहते थे और कल रात में तारों में तुम तुम्हारी माँ को खोज रहे थे। तुम्हारी माँ का 6 महीने पहिले देहांत हो गया, वह तिल्ली (स्प्लीन) के फूलने की बीमारी से परेशान थीं। तुम तुम्हारी माँ को बहुत प्रेम करते थे इसलिए अब बहुत दुखी हो "यह सुनते ही मानो रिचर्ड पर बिजली गिरी और वह आश्चर्यचकित हो बाबा की ओर आँखे फैला कर देखने लगे और सोचने लगे की यह कौन असाधारण दुर्लभ व्यक्ति है? इन्हें कैसे पता लगा की मैं रात में अपनी माँ के बारे में ही सोच रहा था यह बात तो भगवान दास को भी नहीं मालूम है। यह निश्चित ही ईश्वर के दूत या ईश्वर के रूप हैं, यह समझते ही रिचर्ड का हृदय द्रवित हो गया और आँखों से आंसू बहने लगे और फिर रिचर्ड बाबा के चरणों में गिर पड़े। रिचर्ड एल्पर्ट को उनके गुरु, मार्गदर्शक और भगवान मिल चुके थे।

रिचर्ड एल्पर्ट हिंदू गुरु नीब करौरी बाबा के शिष्य बन गए, जिन्होंने उन्हें राम दास नाम दिया, जिसका अर्थ है "राम का सेवक", लेकिन आमतौर पर पश्चिमी दर्शकों के लिए "ईश्वर का सेवक" के रूप में

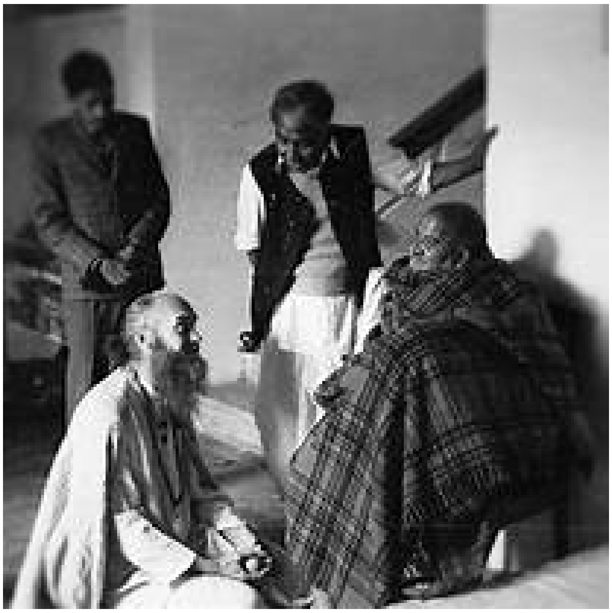

प्रस्तुत किया जाता है। आने वाले वर्षों में, उन्होंने धर्मार्थ संगठनों सेवा फाउंडेशन और हनुमान फाउंडेशन की स्थापना की। उन्होंने 1970, 80 और 90 के दशक में धर्मार्थ कारणों के लिए बड़े पैमाने पर बातचीत और रिट्रीट और फंडरेजिंग की यात्रा की। 1997 में, उन्हें एक आघात हुआ, जिससे उन्हें पक्षाघात हो गया। वह अंततः इस घटना को अनुग्रह के कार्य के रूप में व्याख्या करने के लिए बढ़ा, फिर से बोलना सीख रहा था और पुस्तकों को पढ़ना और लेखक बनना जारी रखता था। 2004 में भारत की यात्रा के दौरान गंभीर रूप से बीमार होने के बाद, उन्होंने यात्रा करना छोड़ दिया और माउ, हवाई चले गए, जहाँ उन्होंने 2019 में अपनी मृत्यु तक अन्य

देवि पूजि पद कमल तुम्हारे। सुर नर मुनि सब होंहिं सुखारे।।

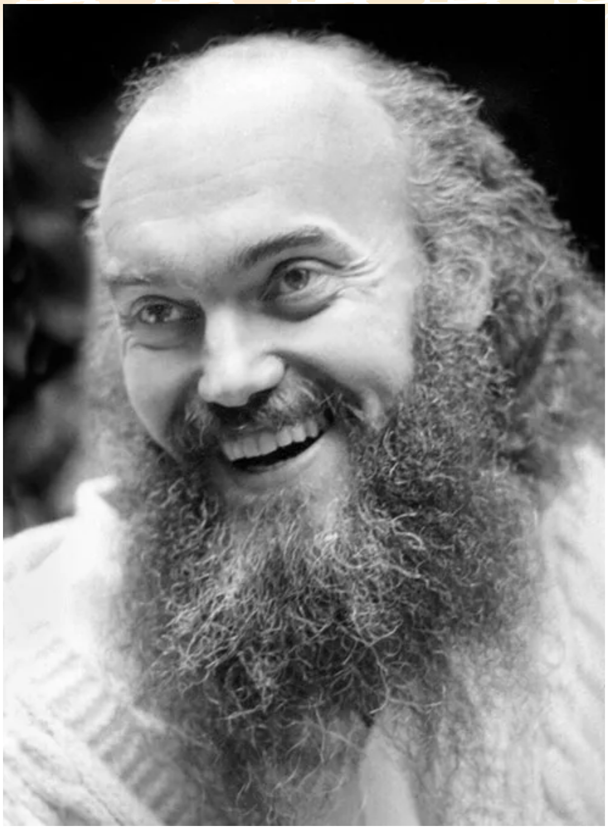

आध्यात्मिक शिक्षकों के साथ वार्षिक रिट्रीट की मेजबानी की।

2013 में, राम दास ने अपने शिक्षण का एक संस्मरण और सारांश जारी किया, पॉलिशिंग द मिररः हाउ टू लिव फ्रॉम योर स्पिरिचुअल हार्ट। पुस्तक के बारे में एक साक्षात्कार में, 82 वर्ष की आयु में, उन्होंने कहा कि वृद्धावस्था और मृत्यु का सामना करने के बारे में उनके पहले के विचार अब उन्हें अनुभवहीन लगते हैं। उन्होंने कहा, आंशिक रूप सेः "अब, मैं अपने 80 के दशक में हूं ... अब, मैं बूढ़ा हो रहा हूं। मैं मृत्यु के करीब पहुंच रहा हूं। मैं अंत के करीब पहुंच रहा हूं। ... अब, मैं वास्तव में सामना करने के लिए तैयार हूं, मेरे चारों ओर संगीत है"। 22 दिसंबर, 2019 को 88 वर्ष की आयु में उनका निधन हो गया।

1968 में भारत से लौटने के बाद से, राम दास ने वह साझा किया है जिसे उन्होंने "महाराजी का गहना" कहा था। लव सर्व रिमेंबर फाउंडेशन बिना शर्त प्यार और गहन ज्ञान की इन शिक्षाओं को आगे बढ़ाने की इच्छा रखता है, जैसा कि राम दास ने अपनी अंतिम सांस तक किया। ■

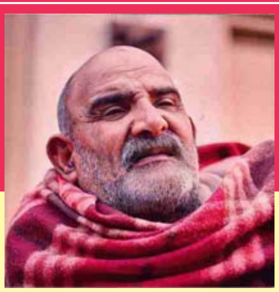

जय गुरुदेव

जय गुरुदेव परम प्रेम के अनुरागी
न्योछावर आप पर जीवन मेरा, आप ही मेरी शक्ति ॥

कल - कल बहते नीर अनंत को
निर्मल कीजिए मन की कम्पन को ॥

जय गुरुदेव हे परम पिता हृदय वासी
नाम ध्यान करने से उदासी सारी मिट जाती ॥

द्वेष उत्पन्न ना हो यही आप से मेरी अभिलाषा प्रभु
मैं जन्म - जन्म आपका नित दास प्रभु ॥

जय गुरुदेव मुकुंद मुख के स्वामी
कृपा आप की जगत के प्रत्येक व्यक्ति ने मानी ॥

मुझ अपराधी को शरण में लेकर
उपकार बड़े किए आपने अबोध को सब कुछ देकर ॥

जय गुरुदेव हनुमंत कृपा के सागर
आप की दृष्टि पड़ी तो समाप्त मेरा सारा आडंबर ॥

जीवन के हर पथ में आप ही साथ चलें
संतान हम सारे आपकी, आपके सानिध्य में पलें ॥

जय गुरुदेव अमृत स्वरूप है कांति आपकी
हृदय परिवर्तन कर देती है चेहरे की शांति आपकी ॥

आपका दिया सब कुछ प्रसाद रूप में स्वीकार है
करिए कृपा, आपका हम पर पूर्ण अधिकार है

जय गुरुदेव स्वभाव के शीतल प्रभु
आपके पावन गगन, थल प्रभु ॥

शताक्षी शर्मा 'अराधना कृष्णा'
गोरखपुर

॥ देवि पूजि पद कमल तुम्हारे। सुर नर मुनि सब होंहि सुखारे।। ॥

महाशिवरात्रि पर लखनऊ में Maharajjibaba.com पोर्टल का विमोचन

महाशिवरात्रि के पावन पर्व पर लखनऊ में पूज्य बाबा नीब करौरी महाराज का साक्षात् आशीर्वाद पाने वाले डॉ. शंकर लाल कपूर ने maharajjibaba.com पोर्टल का विमोचन कर गुरुदेव महाराज के जीवन दर्शन पर आधारित अपने तरीके का पहला ऑनलाइन कार्य शुरू करने की बधाई दी। इससे पहले, हनुमान सेतु मंदिर ट्रस्ट के अध्यक्ष सदाकांत ने परिसर में स्थापित शिवलिंग के पास सैकड़ों शिवभक्तों की मौजूदगी में होमपेज का प्रिंट हाथ में लेकर पोर्टल का विमोचन किया।

पोर्टल के संस्थापक इंजीनियर विजय शर्मा (गुड़गांव, एनसीआर, दिल्ली) ने गुरुदेव महाराज को समर्पित इस महत्वाकांक्षी प्रोजेक्ट की शुरुआत 26 जनवरी, 2023 बसंत पंचमी तिथि को गुड़गांव कार्यालय से कर दी थी लेकिन 18 फ़रवरी दिन शनिवार को लखनऊ में बाबा जी के विशेष कृपा पात्र भक्त डॉ. कपूर जी ने महाशिवरात्रि के पावन पर्व पर निराला नगर स्थित अपने आवास पर mharajjibaba.com पोर्टल का विमोचन किया। इस मौके पर हनुमत् कृपा पत्रिका के संपादक सर्वश्री नरेश दीक्षित, डिजाइनर जितेंद्र कुमार, वरिष्ठ पत्रकार के. एन. पाण्डेय, डॉ. अरविन्द पाण्डेय, रमेश शर्मा, आचार्य आर. एल. पाण्डेय, के. सी. त्रिपाठी, सुनील कुमार मिश्र, गया प्रसाद तिवारी आदि भक्तजन मौजूद रहे।

डॉ. कपूर ने पोर्टल के संस्थापक विजय शर्मा को बधाई देते हुए कहा कि बाबा जी अपना काम खुद आगे बढ़ाते हैं। उनकी प्रेरणा से महाशिवरात्रि पर्व पर शुरू होने वाला यह पोर्टल जल्दी ही अपनी खास कार्य पद्धति से देश – दुनिया में अलग पहचान बनाएगा।

गुरुदेव महाराज द्वारा वर्ष 1967 में लखनऊ में गोमती नदी के किनारे हनुमान सेतु मंदिर बनवाकर उसमें श्रीहनुमान जी की आदमकद मूर्ति की स्थापना करायी गयी थी। मंदिर ट्रस्ट के अध्यक्ष सदाकांत (आईएएस) ने पोर्टल के विमोचन करते हुए कहा कि हनुमत् स्वरूप बाबा जी साधारण दिखने वाला असाधारण व्यक्तित्व के सिद्ध संत हैं। उनका मूल मंत्र था सभी से प्रेम करो, सभी की सेवा करो और भूखे को खाना खिलाओ। उन्होंने बताया कि बाबा जी को दिखावा बिल्कुल पसंद नहीं था। वह संतों के संत और भक्तों के भगवान हैं और उनकी सत्ता आज भी हर स्थान पर विराजमान है। मंदिर में रोजमर्रा के कामकाज देखने वाले चंद्र कांत द्विवेदी ने भी बाबा जी के नाम से शुरू हुए पोर्टल के लिए सारी टीम को बधाई देते हुए दिनोदिन प्रगति करने की शुभकामनाएं दी। ❑

॥ देवि पूजि पद कमल तुम्हारे। सुर नर मुनि सब होंहिं सुखारे॥ ॥

श्रीहनुमान बिड़ला मंदिर में लगेगी गुरुदेव की मूर्ति

बाबा नीब करौरी आश्रम, जौनपुर, नई दिल्ली में 'श्रीमद भागवत सप्ताह कथा का आयोजन किया गया। यह कथा 16 से 22 फरवरी तक चली। इस आनंदमयी कथा का समय दोपहर दो बजे से शाम छह बजे तक निश्चित किया गया था। इस आनंदमयी कथा को अपने मधुर एवं ज्ञानमयी शब्दों से वाचने का कार्य किया भगवतोपासक आचार्य ज्ञानेन्द्र त्रिपाठी महाराज ने, जो श्री वृन्दावन धाम, मथुरा से आये थे। यह आयोजन निश्चित ही मन को मोह लेने वाला था। जहां पर सुनने के लिए साक्षात महाराज जी विराजे हो भला वहाँ पर आध्यात्मिक आनंद की कमी कैसे हो सकती हैं? ■

श्री हनुमान बिरला मन्दिर, बाबा नीब करौरी आश्रम, सिविल लाइंस, कश्मीरी गेट पर श्री महाराज जी ने नवम्बर, 2016 में मन्दिर से संबंधित सेवा करने का सुअवसर प्रदान किया। जल्द ही इस मन्दिर में श्री महाराज जी का विग्रह स्थापित होने जा रहा है। मन्दिर के व्यवस्थापक पं. गोपाल स्वामी 'शास्त्री जी' ने यह शुभ सूचना दी। जैसे ही प्राण प्रतिष्ठा की तिथि निश्चित होगी सभी भक्तों को सूचना दे दी जाएगी। मन्दिर व महाराज जी से जुड़े सभी भक्तों में इस पुनीत कार्य को लेकर प्रसन्नता की लहर दौड़ रही है। मेरे लिए तो निश्चित ही जीवन का अविस्मरणीय दिन होगा।■

प्रस्तुति : श्रेयांस जैन

॥ देवि पूजि पद कमल तुम्हारे। सुर नर मुनि सब होहिं सुखारे॥ ॥

आनंद यात्रा

भगवान श्रीराम ने एक बार पूछा कि लक्ष्मण तुमने अयोध्या से लेकर लंका तक की यात्रा की परन्तु उस यात्रा में सबसे अधिक आनंद तुम्हें कब आया?

लक्ष्मणजी ने कहा कि भैया, मेरी सबसे बढ़िया यात्रा तो लंका में हुई और वह भी तब हुई जब मेघनाद ने मुझे बाण मार दिया!

प्रभु ने हंसकर कहा कि लक्ष्मण तब तो तुम मूर्छित हो गये थे, उस समय तुम्हारी यात्रा कहां हुई थी ?

तब लक्ष्मणजी ने कहा कि प्रभु उसी समय तो सर्वाधिक सुखद यात्रा हुई, लक्ष्मणजी का तात्पर्य था कि अन्य जितनी यात्राएं हुईं उन्हें तो मैंने चलकर पूरा किया लेकिन इस यात्रा की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि मूर्छित होने के बाद भी हनुमानजी ने मुझे गोद में उठा लिया और आपकी गोद में पहुंचा दिया। प्रभु, सन्त की गोद से लेकर ईश्वर की गोद तक की जो यात्रा थी जिसमें रंचमात्र कोई पुरुषार्थ नहीं था, उस यात्रा में जितनी धन्यता की अनुभूति हमें हुई वह तो सर्वथा वाणी से परे है!

लक्ष्मणजी ने कहा प्रभु, शेष के रूप में आपको गोदी में सुलाने का सुख तो मैंने देखा था पर आपकी गोदी में सोने का सुख तो सन्त की प्रेरणा से ही मुझे प्राप्त हुआ इसलिए सबसे महान वही यात्रा थी जो हनुमान जी की गोद से आपकी गोदी तक हुई थी और तब भगवान श्रीराघवेन्द्र ने लक्ष्मण को हृदय से लगा लिया !!■

— ओझा जी, लखनऊ।

यादें जिन्हें भूलना मुश्किल

याद मुझे हैं वे सब पल
जब तुम गोदी में आये थे
नयन उनींदे तनिक खोलकर
देख मुझे मुस्काये थे

सारे लोकाचार निभाये
शनै शनै तुम बड़े हुये
घुटनों के बल चलते चलते
डगमग करते खड़े हुये

बीती अवधि पलक झपकते
समुचित शिक्षा पूरी की
मन्तव्य बना यात्रा की विदेश की
आया वह भी शुभ अवसर

यह था विछोह का प्रथम दृश्य
मिश्रित भावों का रंग लिये
निश्चिन्ता थी वापस आने की
अनुभूति सुखद सी संग लिये

इस बार बिना वादा के तुम
अज्ञात लक्ष्य को चले गये
मैं निस्सहाय सा बना रहा
हम क्रूर नियति से छले गये

हल्की खरोंच लगने पर भी
हो जाती थी विह्वल काया
इस बार तुम्हें निज हांथो से
मैं अग्नि समर्पित कर आया

अनुराग क्षमा करना हमको
मैं तुमको रोक नहीं पाया
मन बुद्धि चेतना शिथिल हुयी
बस रहा देखता जलती काया

जो स्वप्न संजोये थे तुमने
बच्चों और बहू को लेकर
वादा है उन्हें निभाऊंगा
अन्तिम श्वासों तक रह तत्पर

तुम बैठ प्रभू श्री के चरणों में, मुझको वरदान दिला देना
अपने दायित्व निभाने तक की, श्वासों की सौगात दिला देना
अब तो तुम हो गये देव तुल्य, आशीष सभी को तुम देना
याद करूं तुमको हर पल हर क्षण, मत कभी भूलने तुम देना

॥ देवि पूजि पद कमल तुम्हारे। सुर नर मुनि सब होंहि सुखारे।। ॥

कृष्ण दास के भजन सुनकर मंत्रमुग्ध हुए बाबा नीब करौरी महाराज के भक्त

ऋषिकेश में कार्यक्रम प्रस्तुत करते बाबा नीब करोरी महाराजजी के भक्त व अमेरिकी भजन कीर्तन गायक संगीतकार कृष्ण दास

19 जनवरी 2023 को बाबा नीब करौरी के अनन्य तथा अति प्रिय भक्त श्री कृष्णदास जी ने ऋषिकेष में संगीत समारोह का आयोजन किया। कृष्णदास जी अमेरिकन भक्ति संगीतकार हैं, जो ग्रैमी पुरुस्कार के लिए भी मनोनीत हुए हैं। उन्होंने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अनेकों सम्मानजनक पुरुस्कार भी जीते हैं। कृष्णदास जी के प्रेरणा स्रोत और मार्गदर्शक बाबा नीब करौरी और सिद्धि माँ ही रहे हैं तथा उनको माँ और बाबा के साथ एक लंबा समय व्यतीत करने का और उनकी सेवा करने का सुअवसर भी प्राप्त हुआ है।

आरती कोहली
दिल्ली
परा मनोचिकित्सक

यह कार्यक्रम कैंसर से जूझ रहे पीड़ित व्यक्ति जो कि मरणासन्न रूप से बीमार हैं, और जिनकी देखभाल का उत्तरदायित्व "गंगा प्रेम हॉस्पिस" नामक संस्था उठाती है के लिए किया गया। यह कार्यक्रम शीशमझाड़ी के स्वामी स्वतंत्रतानंद आश्रम जो कि दयानंद मार्ग पर स्थित है, में आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम के 2000 से ऊपर व्यक्ति साक्षी हुए जिसमें

॥ देवि पूजि पद कमल तुम्हारे। सुर नर मुनि सब होंहि सुखारे।। ॥

ऋषिकेश 18 फरवरी 2023 बाबा नीब करौरी महाराज जी वीरभद्र आश्रम में अमेरिकी भजन कीर्तन गायक संगीतकार कृष्ण दास जी की टीम के सदस्य नीना राव और एड अपनी संगीत प्रस्तुति देते हुए।

भारतीय और विदेशी भक्त दोनों उपस्थित थे।

कृष्णदास और बाबा नीब करौरी से सम्बंधित बाबा नीब करौरी के अति प्रिय भक्त श्री रब्बू जोशी, बाबा नीम करौरी के पौत्र श्री धनंजय शर्मा, गंगा प्रेम हॉस्पिटल के बोर्ड की सदस्या जिन्हें प्यार से लोग नानी माँ बुलाते हैं और अन्य कई विख्यात व्यक्ति भी इस कार्यक्रम में सम्मिलित हो कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई।

कृष्णदास जी ने "भज लो जी हनुमान", "ॐ नमः शिवाय", "हनुमान चालीसा" आदि से सुरों का जादु कुछ इस प्रकार बिखेरा कि सारे भक्त मंत्रमुग्ध हो गए। एक ही छत के नीचे, भक्तों के असीमित भाव देखने को मिले। कोई उनके सुरों में झूम रहा था तो कोई अपने आप को ईश्वर के इतने समीप पाकर श्रद्धा से भाव विभोर हो अश्रुओं में सराबोर था। मैं गलत नहीं होंगी अगर मैं कहूँ कि हज़ारों की भीड़ में लाखों भाव देखने और करोड़ों भाव अनुभव करने का अवसर मिला क्योंकि यही भाव अन्य सह श्रोताओं द्वारा भी मुझ से साँझा किए गए। कार्यक्रम कि समाप्ति होने तक पूरा परिसर सिर्फ प्रेम और भक्ति रस में डूबा हुआ था। ■

मन को लुभाती हैं ऋषिकेश में गंगा की लहरें

ऋषिकेश में गंगा के तट बैठ, अनेकों भाव मन मैं लिए मैं उनको हर तरह से निहार रही थी। दिल में अपार एवं अथाह प्रेम के बीच एक विचार मन में आया, जिसे मैं शब्द देने से रोक नहीं पाई। आज इसी मन के भाव और हृदय के प्रेम को आप सब पाठकों के साथ साझा करने के विचार से यह लेख आपके समक्ष प्रस्तुत करने का एक छोटा सा प्रयास कर रही हूँ।

गंगा माँ गौमुख से उद्‌गम हो न जाने कितनी ही नदियों को अपने में समेटते हुए एक लंबी यात्रा तय करती हैं। है तो ये गंगा ही.. हर जगह समान, पर फिर भी असामान्य और अतुल्य। जैसे जिसके भाव होते हैं और जो उन्हे जिस दृष्टि से देखना चाहता हैं वह उनको वैसा ही पाता हैं। किसी के लिए यह 'पवित्र गंगा' नदी हैं, तो किसी के लिए साहस और रोमांच का स्थल। कुछ लोगों के लिए यह मोक्ष का द्वार है तो कुछ मानते हैं कि इनके स्पर्श मात्र से सारे रोग नष्ट हो जाते हैं। जिस प्रकार एक माँ अपने बच्चे की हर इच्छा पूरा करने का प्रयास करती हैं, उसी प्रकार जो इनकी शरण मैं आता है वह इच्छानुसार उसकी पूर्ति कर देती हैं। शायद यही कारण है की गंगा जी को "गंगा माँ" कहकर संबोधित किया जाता है।

पर क्या इसका मतलब ये है कि इसका स्वरूप सब जगह अलग है? मेरे विचार से नहीं। जो इसकी गोद में आकर, जैसा अनुभव करना चाहता है, वह वही पाता है।

जिस तरह प्रेम, उत्साह, शोक, हास्य, भय, क्रोध सब मनुष्य के अंतरमन के भाव है, बाहरी संसार तो सदैव ऐसा ही था और ऐसा ही रहेगा। हम बाहरी संसार को कैसे देख रहे हैं और क्या प्रतिक्रिया दे रहे हैं, ये हम पर निर्भर करता है। बाहरी दुनिया तो केवल प्रेरक मात्र है, हम उसे देख क्या प्रतिक्रिया देंगे, ये हमारे हाथ में है और हम स्वेच्छा और संयम से इस पर नियंत्रण पा सकते हैं। परंतु यह संतुलन किस तरह बनाना है यह अपने आप में एक चुनौती है। जिस दिन मनुष्य यह सीख गया या कहिए कम से कम इस बात का बोध हो गया कि अपनी मनोस्थिति पर वह विजय पा सकता हैं और उसके लिए सही दिशा मैं प्रयास करना शुरू कर दे तो जीवन निश्चित ही सरल और मधुर हो जाएगा। ■

प्रस्तुति : आरती कोहली

॥ देवि पूजि पद कमल तुम्हारे। सुर नर मुनि सब होंहिं सुखारे।। ॥

एसकेए ग्रीन आर्क सोसायटी स्थित 'शिव मन्दिर' में धूमधाम से मनायी गयी महाशिवरात्रि

एस.के.ए. ग्रीन आर्क सोसायटी, ग्रेटर नोएडा (वेस्ट) में स्थित 'शिव मंदिर' में इस वर्ष 18 व 19 फरवरी को 'महाशिवरात्रि' पर्व 'शुभ टेम्पल' ग्रुप व अन्य भक्तजनों के सहयोग से धूमधाम से मनाया गया। 18 फरवरी को संध्या 8 बजे से 12 बजे तक सामूहिक रूप से 51 जोड़ों द्वारा पार्थिव रुद्राभिषेक पंडित सोनू पांडे एवं अन्य आचार्यों के मार्गदर्शन में संपन्न कराया गया।

दिनांक 19 फरवरी 2023 को भंडारे का आयोजन कर प्रसाद वितरण कराया गया। कार्यक्रम को सफलतापूर्वक संपन्न कराने में श्री प्रवीण राठौर, श्री रूपेश श्रीवास्तव, श्री पंकज द्विवेदी एवं श्री जय कत्याल आदि द्वारा अग्रणी भूमिका निभाई गयी। ■

सोनू पाण्डेय
ग्रेटर नोएडा
मो.: 7834904672

॥ देवि पूजि पद कमल तुम्हारे। सुर नर मुनि सब होंहिं सुखारे।। ॥

तुम हो पथिक साधना पथ में

तुम हो पथिक साधना पथ में
समझ समझ कर पैर बढ़ाना।
अविनाशी के सम्मुख होकर
नश्वर में मत प्रीति फँसाना।।
दृढ़ संकल्प और साहस के साथ
प्रेम को पूर्ण बनाकर।
आकृति नहीं किंतु तुम अपनी
परम विरागी की प्रकृति बनाकर।
शांत स्वस्थ क्षमता में रहना
कभी ना अपना लक्ष्य भुलाकर
पूर्ण तृप्ति संतुष्टि मिलेगी
अपने में ही प्रभु को पाकर।
आकर योग भूमिका में
अब भोग–भूमि में लौट न जाना।।
यदि तुम अपना मान किसी को
मन में ममता प्यार प्यार लिए हो।
और साथ ही शान मान के
पद उपाधि अधिकार लिए हो।
भौतिक जीवन रक्षा के हित
धन वैभव का भार लिए हो।
भय लालच बस किसी व्यक्ति का
अब भी यदि आधार लिए हो।
तब तो तुम बोझिल हो देखो
बहुत कठिन है अब भी उठाना।।
देखो कितने अविवेकी जन
मोह निशा में ही सोते हैं।।
दुःखद स्वप्न में गुरु वाक्यों से
कोई जागृत भी होते हैं।
ज्ञानवान भी सुखासक्तिवश
जग में मूढ़ बने होते हैं।
आत्मज्ञान से वंचित रहकर
यहां व्यर्थ जीवन होते हैं।
साथ ना देगा सदा जगत में
जिसे मोह बस अपना माना।।
साधन पथ में लक्ष्य न भूलो
यही तुम्हारा मुख्य काम है।
वही तुम्हें विश्राम मिलेगा
जहां तुम्हारा परमधाम है।
पर में नहीं स्वयं में रुकने से
मिलता सबको विराम है।
जिसका आना जाना रहता
यहाँ उसी का पथिक नाम है।
बाहर नहीं स्वयं में ही है
सबका निश्चित सत्य ठिकाना।।
तुम हो पथिक साधना पथ में
समझ–समझ कर पैर बढ़ाना।

– संत पथिक जी

॥ देवि पूजि पद कमल तुम्हारे। सुर नर मुनि सब होहिं सुखारे।। ॥

अपनी दया परवश हो, ऐसा भी करोगे तुम?
जो मिल नही सकता तुमसे, उसे भी मिलोगे तुम?

तुम्हारी कृपा के सहारे, तुमसे है मिलना राघव
करुणा के सिंधु राघव, करुणा करोगे तुम?

दीनबंधु - करुणासिंधु, शब्द याद कर लेना
नाम है तुम्हारे सब ये, भूल क्यों गए हो तुम ?

सदगुण तुम्हारे सारे, अवगुण पे मेरा कब्जा
कम नही तुमसे जरा भी, मित्रता करोगे तुम?

दयासिंधु हो अगर तुम, अघसिंधु हम भी है
हम दोनों सिंधु जैसे, अब क्या कहोगे तुम ?

खुद ही चले आना अब, देर नही करना राघव
प्राण जब निकल जाएंगे, किससे मिलोगे तुम ?

मेरे प्यारे 'राम' हो तुम, मैं हूं तुम्हारा 'रतन'
अपने मन की करते सदा, मेरी कब सुनोगे तुम?

रत्नेश ओझा
लखनऊ
मो. 9389706995

देवि पूजि पद कमल तुम्हारे। सुर नर मुनि सब होंहिं सुखारे।।

सत्यम् - शिवम् - सुन्दरम्

प्रणवी (डॉ. पायल सेन)
बंगलौर
आइसा (अमेरिका)

सच्चिदानंद शिव स्वरुप भगवान् शंकर के आत्मलीन हृदय की गहराईयों में उद्भाषित होकर परब्रह्म श्री राम के दिव्य जीवनचरित की व्याख्यान सर्वप्रथम माता पार्वती के श्रद्धापूर्ण हृदय को स्पर्श करते हुए ही इस धरातल पर अपनी सुमंगलकारी यात्रा प्रारम्भ करती है। प्रेम सरिता का यह कालजयी बहाव अज्ञानता पीड़ित अंधकारमय संसार के मध्य स्थित उज्जवलता के गुप्त रहस्य को निरंतर उजागर करती है। श्री रामचरितमानस के पंचम सोपान (सुन्दरकाण्ड) की सुंदरता भी ईश्वर रूपी सत्य–दर्शन में निहित सौंदर्य की एक अभूतपूर्व अभिव्यक्ति है।

सनातन धर्म में अविनाशी 'ब्रह्म' को ही सर्वोच्चय सत्य माना गया है। सर्वव्यापी ब्रह्म (परमेश्वर) निराकार, निर्विकार, निर्गुण तथा अमूर्त है– "सत्यम, ज्ञानम्, अनन्तम् ब्रह्म – तैत्तिरीयोपनिषद्। वेदांत दर्शन "तत त्वम् असि" जैसे महावाक्यों के माध्यम से आत्मा एवं ब्रह्म में मौलिक ऐक्य की सफल स्थापना करता है। इस दृष्टिकोण से किसी भी प्राणी का सांसारिक जीवनकाल भी उस जीवात्मा द्वारा मूल सत्य (ब्रह्मविद्या या आत्मज्ञान) के अनुसंधान सफर की एक कड़ी मात्र है जिसकी अन्वेषण के पश्चात् वह सांसारिक द्वन्द–कठिनाइयों के माया पाश तथा जन्म मृत्यु के चक्र से सदा के लिए मुक्त हो जाता है।

'सत्य' शब्द 'सत' (यह) और 'तत' (वह) धातुओं के सम्मिश्रण से निर्मित है जिसका अर्थ है: 'यह भी' और 'वह भी'। सत्य का यही द्वैत चरित्र का प्रतिफलन पार्थिव जगत की प्रकृति में भी स्वाभाविक रूप से विद्यमान है जिसमें साधारण सत्य का प्राकट्य प्रायः पूर्ण न होकर प्रासंगिक होता है। माया–सृष्ट सांसारिक वास्तविकता का अस्तित्व आभासी या आरोपित है। मोह के वश में आकर जीव का विकार–युक्त मन भौतिक गतिविधियों में सत्य की प्रतीति कर प्राणी को सर्वथा भ्रमित रखता है। संभवतः नाग माता सुरसा का श्री हनुमान जी की वचन पर अनास्था तथा वानर राज सुग्रीव का विभीषण जी के आगमन पर उनकी नीयत पर संदेह व्यक्त करना सत्य की इसी सापेक्षता का सूचक है। तथापि, विरोधाभासी भावनाओं से घिरा हुआ विकाराछन्न मन के अंतर्गत छिपा रहता है स्थितप्रज्ञ आत्मा या साक्षी स्वरुप ईश्वर। जिस तरह श्री राम चरणों की भक्ति में लीन त्रिजटा का 'निपुण विवेक' उसे लंका के भावी सत्य का संक्षिप्त परिदर्शन कराती है, ठीक उसी तरह शरणागत विभीषण का निर्मल हृदय भी लंकापति रावण के अधर्मी आचरणों का मौन द्रष्टा रहते हुए अपने सत्य धर्म पर दृढ प्रतिज्ञ रहने में सर्वदा सक्षम होता है।

चित्त शुद्धि के बिना आपेक्षिक सत्य के परे जाकर उस परम सत्य की उपलब्धि कदापि संभव नहीं। और चित्त शुद्धि के लिए प्राथमिक पूर्वशर्त है मन, वाणी

॥ देवि पूजि पद कमल तुम्हारे। सुर नर मुनि सब होंहि सुखारे।। ॥

एवं कर्म में सत्यता और समता। पवित्र हृदय का स्वच्छ दर्पण ही सत्य का पूर्ण चेतन रूप की छवि को धारण करने में समर्थ है। इसका ज्वलंत प्रमाण है सत्यनिष्ठ हनुमान जी के हृदय कमलासन पर नित्य प्रतिष्ठित परमात्मा श्री सीता–राम की दीप्त जुगल मूर्ति। इन्द्रिय–ग्राह्य तार्किक/बौद्धिक ज्ञान हमें वस्तुगत जगत के सत्य को समझने की सीमा तक ले जाने में तो सहायक सिद्ध हो सकता है परन्तु उसके अतिक्रमण में नहीं। ईश्वरीय सत्य की प्रत्यक्ष अनुभूति के लिए आवश्यक है अन्तःकरण में सूक्ष्म अंतर्ज्ञान। प्रथम भेंट से पूर्व विभीषण जी की साधुता पर तार्किक बुद्धि–प्रेरित प्रश्न–चिन्ह उठने के बावजूद श्री हनुमान जी के शुद्ध चित्त ने उनके सही पहचान को क्षण भर में जान लिया–

"लंका निसिचर निकर निवासा। इहाँ कहाँ सज्जन कर बासा
मन महुँ तरक करैं कपि लागा। तेहीं समय बिभीषनु जागा
राम राम तेहिं सुमिरन कीन्हा। हृदयँ हरष कपि सज्जन चीन्हा
एहि सन सठि करिहउँ पहिचानी। साधु ते होइ न कारज हानी"

'राम' नाम की गूंज उनके तार्किक मन में उत्पन्न द्वन्द को निमिष मात्र में शांत कर उनके सरल हृदय को पुलकित कर देता है।

सत्य कथन और सत्य आचरण प्राणी के आत्मबल को बढ़ाकर उसे सर्वाधिक विषम परिस्थितियों के समक्ष भी निर्भीक बनाता है। श्री राम कृपा से लंका यात्रा के दौरान हनुमान जी की सत्यवादिता उन्हें हर बाधा–विपत्ति पर विजय दिलाने के साथ–साथ माता जानकी के मन के संदेह को भी सकुशल दूर कर दिया। भरी सभा में रावण द्वारा अपमानित और आहत होने के उपरान्त इसी अदम्य साहस का प्रदर्शन करते हुए विभीषण जी सहर्ष समुद्र लांघ कर अपने प्रभु की शरण प्राप्ति हेतु प्रस्थान करते है–

"रामु सत्यसंकल्प प्रभु सभा कालबस तोरि।
मैं रघुबीर सरन अब जाउँ देहु जनि खोरि"

सत्य स्वयंसिद्ध और अजेय है जिसके केवल एक प्रहार से ही सभी प्रकार की अज्ञानता रूपी अशुद्धियाँ विध्वंस्त हो जाती है। अतः हनुमान जी के मुष्टिका प्रहार से लंकिनी के ज्ञान चक्षु तत्काल खुलकर उसे सत्य का पुनः स्मरण और बोध करा देते है। सत् के साथ साक्षात्कार (सत्संग) लंकिनी को अतुलनीय शांति और परम सद्गति प्राप्त कराती है।

"तात स्वर्ग अपबर्ग सुख धरिअ तुला एक अंग।
तूल न ताहि सकल मिलि जो सुख लव सतसंग।।"

सर्वावस्था में सत्य का ज्ञान होने और सत्य को धारण करने की क्षमता रखना मनुष्य के लिए कठिन है परन्तु गुरु कृपा से सजगतापूर्वक निरंतर अभ्यास के द्वारा यह प्रयास क्रमशः सरल होने लगता है। लौकिक स्तर पर नित–प्रतिदिन सत्य आचरण एवं सत्य का समर्थन करते हुए जब साधक आध्यात्मिक पथ पर अग्रसर होता है तो धीरे–धीरे उसके विशुद्ध हृदय में उस मूल तत्त्व (कण) का प्रत्यक्ष अनुभव होना प्रारम्भ हो जाता है। भक्त का अपने आराध्य के प्रति समर्पण पूर्ण होने पर उसकी शुद्ध–चेतन आत्मा में सत् की अमिट छवि अंकित होने लगती है जिसके फलस्वरूप उसका अभिमान–मुक्त निर्लिप्त मन परमानंद में लीन रहता है। श्री राम जी का हनुमान जी को प्रेमपूर्वक आलिंगन (आत्मा और परमात्मा के अमर मिलन की मनोरम झलक) का ध्यान धर माता पार्वती सहित महादेव मधुर राम रस का आस्वादन कर रामानंद में मग्न हो जाते है।

"बार बार प्रभु चहइ उठावा। प्रेम मगन तेहि उठब न भावा।।
प्रभु कर पंकज कपि कें सीसा। सुमिरि सो दसा मगन गौरीसा।।"

सत्य परमानंदस्वरूप एवं स्थायी सौंदर्य का स्रोत्र है। जिस तरह किसी मनमोहक दृश्य का क्षणिक अवलोकन ही मन को प्रफुल्लित कर देता है, उसी तरह हृदय में ईश्वर (सत्य) की निकटता व दिव्य प्रेम के अनुभव से आत्मा में निर्मल आनंद एवं नवीन सौंदर्य का निरंतर संचार होता रहता है। महेश्वर द्वारा कथित सुन्दरकाण्ड का अत्यंत सुन्दर वृत्तांत आत्मिक उत्थान की अमर कथा है जो हमें श्री राम रुपी शास्वत सत्य के समीप ले जाकर उनसे अटूट सम्बन्ध स्थापित करने की कला सिखाता है।

श्री राम रामेति रामेति रमे रामे मनोरमे
(भगवान शिव कहते हैं– हे पार्वती! श्रीराम नाम को मुख में विराजित कर मैं इन्हीं मनोरम राम में रमता रहता हूँ।)
।। श्री सीतारामचन्द्रः अर्पणमस्तु ।। ■

भक्तजनों पर पूज्य बाबा नीब करौरी महाराज की कृपा बनी रहे
चैत्र नवरात्रि व रामनवमी
पर सभी सनातनी बंधुओं को हार्दिक शुभकामनाएं

सुनील श्रीवास्तव
जौनपुर
9455322393

देवि पूजि पद कमल तुम्हारे। सुर नर मुनि सब होंहि सुखारे।।

श्री रामेश्वराय नमः

सर्वज्ञ सदाशिव अविनाशी
पालक संहारक परमेश्वर
हे आदि देव प्रभु रूद्र रूप
श्री चरणों में मेरा प्रणाम

हे सर्वश्रेष्ठ देवाधिदेव
दारिद्रय रोग के संहारक
हे लोकगुरू प्रभु उमानाथ
श्री चरणों में मेरा प्रणाम

हे जग के उत्पत्ति कारक
बीज रूप प्रभु भव स्वरूप
अविनाशी प्रभु गौरी प्रिय
श्री चरणों में मेरा प्रणाम

चिन्मय स्वरूप है अतुलनीय
धारक त्रिनेत्र प्रभु अप्रमेय
विघ्नेश्वर गणपति के प्रिय
श्री चरणों में मेरा प्रणाम

दुःख शोक विनाशक गंगाधर, भक्तों के वशवर्ती प्रभु नन्दिनाथ।
चन्द्रमौलि प्रभु अभयंकर, श्री चरणों में मेरा प्रणाम।।

आशुतोष द्विवेदी
बैंगलोर

देवि पूजि पद कमल तुम्हारे। सुर नर मुनि सब होहिं सुखारे।।

बाल मन में हनुमान

अवन्तिका द्विवेदी
कक्षा–4, बैंगलोर

किरण
लखनऊ

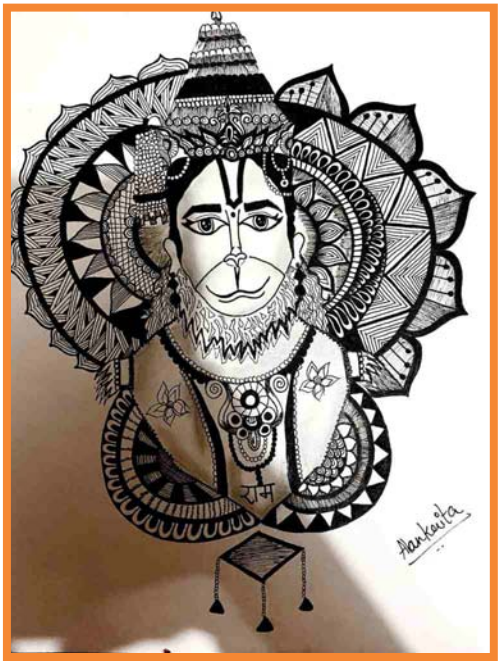

अलंकृता
नई दिल्ली

पूजा शर्मा
नई दिल्ली

॥ देवि पूजि पद कमल तुम्हारे। सुर नर मुनि सब होहिं सुखारे।। ॥

हनुमत् कृपा पत्रिका मासिक पंचांग - अप्रैल २०२३

शक सम्वत १९४५ ।। विक्रम सम्वत २०८०

दिनांक	दिवस	सूर्य उदय समय	सूर्य अस्त समय	नक्षत्र	तिथि काल: तिथि	तिथि काल: कब तक	व्रत - पर्व
चैत्र शुक्लपक्ष							
1	शनिवार	06:00	18:25	अश्लेषा	एकादशी	04:19 ND	कामदा एकादशी
2	रविवार	05:59	18:26	मघा	द्वादशी	06:24 ND	वामन द्वादशी
3	सोमवार	05:58	18:26	मघा	द्वादशी	06:24	प्रदोष व्रत
4	मंगलवार	05:57	18:27	पू० फा०	त्रयोदशी	08:05	महावीर स्वामी जयन्ती
5	बुधवार	05:56	18:27	उ० फा०	चतुर्दशी	09:19	
6	गुरूवार	05:55	18:28	हस्त	पूर्णिमा	10:04	श्री हनुमान जयन्ती
वैशाख कृष्ण पक्ष							
7	शुक्रवार	05:54	18:28	चित्रा	प्रतिपदा	10:20	
8	शनिवार	05:53	18:29	स्वाती	द्वितीया	10:10	
9	रविवार	05:52	18:29	विशाखा	तृतीया	09:35	
10	सोमवार	05:51	18:30	अनुराधा	चतुर्थी	08:37	
11	मंगलवार	05:50	18:30	ज्येष्ठा	पंचमी	07:17	
12	बुधवार	05:49	18:31	मूल	सप्तमी	03:44 ND	षष्ठी तिथि हानि
13	गुरूवार	05:48	18:31	पू० षा०	अष्टमी	01:34 ND	
14	शुक्रवार	05:47	18:32	उ० षा०	नवमी	23:13	मेष संक्रान्ति
15	शनिवार	05:46	18:32	श्रवण	दशमी	20:45	
16	रविवार	05:45	18:33	धनिष्ठा	एकादशी	18:14	वरूथिनी एकादशी
17	सोमवार	05:44	18:33	पू० भा०	द्वादशी	15:46	प्रदोष व्रत
18	मंगलवार	05:43	18:34	उ० भा०	त्रयोदशी	13:27	
19	बुधवार	05:42	18:34	रेवती	चतुर्दशी	11:23	
20	गुरूवार	05:41	18:35	अश्विनी	अमावस्या	09:41	सूर्य ग्रहण
वैशाख शुक्ल पक्ष							
21	शुक्रवार	05:40	18:35	भरणी	प्रतिपदा	08:28	
22	शनिवार	05:39	18:36	कृतिका	द्वितीया	07:49	श्री परशुराम जयन्ती
23	रविवार	05:38	18:36	रोहिणी	तृतीया	07:47	
24	सोमवार	05:37	18:37	मृगशिरा	चतुर्थी	08:24	
25	मंगलवार	05:36	18:37	आर्द्रा	पंचमी	09:39	श्री शंकराचार्य जयन्ती श्री सूरदास जयन्ती
26	बुधवार	05:35	18:38	पुनर्वसु	षष्ठी	11:27	
27	गुरूवार	05:35	18:38	पुनर्वसु	सप्तमी	13:38	गंगा सप्तमी
28	शुक्रवार	05:34	18:39	पुष्य	अष्टमी	16:01	
29	शनिवार	05:33	18:39	अश्लेषा	नवमी	18:22	जानकी जयन्ती
30	रविवार	05:32	18:40	मघा	दशमी	20:28	

॥ देवि पूजि पद कमल तुम्हारे। सुर नर मुनि सब होहिं सुखारे।। ॥

हनुमत कृपा

मासिक पत्रिका

सदस्यता पत्र

महोदय,

मैं 'हनुमत् कृपा' मासिक पत्रिका का वार्षिक/द्विवार्षिक/पंचवार्षिक/दशवार्षिक/आजीवन सदस्य रुपये.. (शब्दों में ....) नकद/डीडी/चेक/बैंक ड्राफ्ट/यूपीआई मनी ट्रांसफर द्वारा भेज रहा/रही हूं कृपया मुझे 'हनुमत् कृपा' मासिक पत्रिका के अंक नियमित रूप

बैंक ड्राफ्ट/डीडी/चेक सं. .... दिनांक ....

बैंक का नाम .... नामः ....

पिता का नाम .... पताः ....

.... पिन कोड ....

जिला .... राज्यः.. दूरभाष/मो...

ईमेलः..

सदस्य के हस्ताक्षर

विशेष नियम :

1. नवीनीकरण के लिए शुल्क भेजते समय कृपया सदस्यता क्रमांक अवश्य लिखें।
2. कृपया अपना नाम व पता स्पष्ट अक्षरों में लिखें। उत्तर प्रदेश के बाहर के चेक भेजते समय बैंक शुल्क जोड़कर भेजें।
3. अगर हनुमान जी व बाबा जी के किसी भक्त को पत्रिका के पिछले अंको की जरुरत हो तो वह आगे के अंकों में समायोजित (एडजस्ट) करके भेजे जा सकते हैं।

सदस्यता प्रकार	शुल्क
वार्षिक	रू. 1500/–
द्विवार्षिक	रू. 2500/–
पंचवार्षिक	रू. 7100/–
दशवार्षिक	रू. 11000/–
आजीवन सदस्य	रू. 21000/–

Name : Hanumat Kripa Media
A/c No. : 3476717139
Bank : Central Bank Of India
IFSC : CBIN0283705
Branch : Eram College,
Indira Nagar, Lucknow.

हनुमत् कृपा ट्रस्ट

बी–2778, इन्दिरा नगर, लखनऊ, उत्तर प्रदेश
मोबाइल नं. 9415120002
बेबसाइट : www.hanumatkripaa.com, hanumatkripa.page

इससे पहले, मौनी अमावस्या को प्रयागराज के सोहबतिया बाग में गीता निकेतन हनुमान मंदिर के पास बाबा जी के परम् भक्त चित्रगुप्त वार्ष्णेय के मार्ग दर्शन में दर्जनों गुरुभाई व गुरुबहनों ने चाय–बिस्किट, ब्रेड, लाई के लड्डू, बूँदी व सेवई आदि का भंडारा किया। भंडारे में बाबा जी के भक्त राकेश श्रीवास्तव, सुनील कुमार, मोती भाई, अभय कुमार, रोहित वार्ष्णेय, पूनम वार्ष्णेय, गीता, अनिल कुमार पाण्डेय, अंशुमाली राय, रतन प्रकाश, मोहित वार्ष्णेय, पंकज श्रीवास्तव, राकेश गुप्ता, अरविन्द सिंह, अमित सिंह, संतोष कुमार यादव, अरुण कुमार, चिंतामणि, राधेश्याम अस्थाना, सुधांशु श्रीवास्तव, अजय श्रीवास्तव, हिमांशु उपाध्याय, बृजेश साहू, श्रीमती सत्या पाण्डेय आदि ने सहयोग और सेवा की। ■

इस बीच, दुबई से आये बाबा जी के अनन्य भक्त पवन द्विवेदी और सीतामढ़ी से आये श्याम नारायण सिंह के साथ गुरुदेव महाराज के भक्त राधेश्याम अस्थाना, राकेश गुप्ता व चित्रगुप्त वार्ष्णेय आदि ने संगम तट पर सामूहिक हनुमान चालीसा पाठ करके श्रीहनुमान जी व बाबा जी की आरती की। बाद में दुबई व सीतामढ़ी से आये दोनों भक्तजनों को श्री वार्ष्णेय ने हनुमत् कृपा पत्रिका, राम नाम चेकबुक और बाबा जी का चित्र देकर सम्मानित किया। श्री वार्ष्णेय ने बताया कि पूज्य बाबा नीब करौरी महाराज जी का दुबई में भी बहुत सुंदर मंदिर बन गया है। ■

बीते महीने कैंची धाम (नैनीताल) से प्रयागराज आये पूज्य गुरुदेव महाराज के परम् भक्त मोहन जोशी का बाबा जी के भक्त चित्रगुप्त वार्ष्णेय ने माल्यार्पण कर उन्हें अंग वस्त्र, हनुमत् कृपा पत्रिका, राम नाम लेखन चेकबुक व हनुमत् कृपा ट्रस्ट द्वारा छपवा गया बाबा जी का कलेंडर देकर सम्मानित किया और आशीर्वाद लिया। श्री वार्ष्णेय जी के साथ गुरुदेव महाराज के भक्त राकेश गुप्ता ने भी मोहन जोशी को सम्मानित कर आशीर्वाद प्राप्त किया। ■

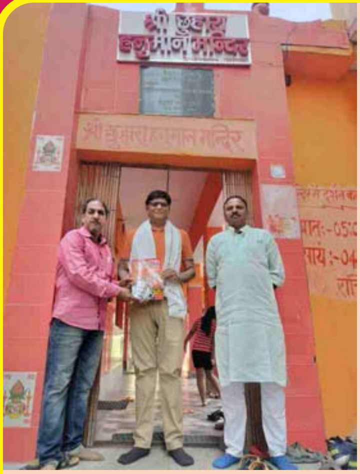

इस बीच, मुंबई से प्रयागराज आये बाबा नीब करौरी महाराज जी के भक्त व आदित्य बिड़ला ग्रुप के अवकाश प्राप्त सीईओ राजीव गोयल का प्राचीन छुवारा हनुमान मंदिर में गुरुदेव महाराज के कृपा पात्र चित्रगुप्त वार्ष्णेय ने अंग वस्त्र, हनुमत् कृपा पत्रिका व बाबा जी का चित्र देकर सम्मानित किया। मंदिर में सामूहिक सुंदर कांड व हनुमान चालीसा पाठ और आरती की गयी। श्रीहनुमान जी को फल की माला भेंट की गयी तथा सभी भक्तों को प्रसाद वितरित किया गया। इस मौके पर डॉ. वाई. पी गुप्ता, डॉ. प्रमिला गुप्ता, डॉ. नमिता गोयल, अजय सिंह रामू व राकेश गुप्ता आदि भक्तजन मौजूद रहे। ■

मोदीनगर के श्रीगुरुधाम मंदिर में यज्ञ व भजन-कीर्तन

गाजियाबाद के मोदी नगर में स्थापित श्रीगुरुधाम मंदिर में गत 15 फ़रवरी को परम् श्रद्धेय गुरु पं. बृज मोहन शर्मा (बड़े गुरु जी) की सातवीं पुण्यतिथि भक्तों द्वारा धूमधाम से मनाई गयी। शुरुआत गुरु चरण वंदना और यज्ञ से हुई। वर्तमान पीठासीन छोटे गुरु पं. सुनील शर्मा की अगुवाई में यज्ञ सम्पन्न हुआ। वेदमंत्रों व स्वाहा की ध्वनि से सारा वातावरण गुंजायमान हो गया। बाद में, फोर्टिस अस्पताल, नोयडा के सहयोग से चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया जिसमें विशेषज्ञ डाक्टरों ने निःशुल्क सलाह, जाँच दवाएं वितरित की। साथ ही, डॉ. राम मनोहर लोहिया अस्पताल के डाक्टरों की मदद से रक्तदान शिविर लगाया गया जिसमें रक्तदाताओं को संस्था की ओर से पौष्टीक आहार भी दिया गया। बड़े गुरु जी की पुण्यतिथि पर भंडारे का आयोजन किया गया जिसकी शुरुआत वैदिक ब्राह्मणों को भोजन प्रसाद खिलाकर की गयी। बाद में क्षेत्र के सैकड़ों भक्तजनों ने भोजन प्रसाद ग्रहण किया। अंत में, भक्ति संगीत कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें भक्तों ने भक्तिमय माहौल में भजन–कीर्तन सुनाये। उपस्थित भक्तजनों ने भावविभोर होकर भजनों का आनंद उठाया। पुण्यतिथि के इस कार्यक्रम में खास कर संजय गौड़, श्रुति शर्मा, गौरव शर्मा (कैलीफोर्निया), राहुल त्यागी–सपना त्यागी (कनाडा), आदेश शर्मा–रेखा शर्मा (मुंबई) व प्रयागराज से ज्योतिषाचार्य चिंतामणि भी शामिल हुए। ■

UPHIN/2015/46772

नीब करौरी आश्रम में मिला बाबा जी का आशीर्वाद

बीते महीने नीब करौरी आश्रम, फर्रुखाबाद के स्थापना दिवस (15 फ़रवरी) पर हनुमान सेतु मंदिर, लखनऊ से बस में सवार होकर दर्जनों भक्त हनुमान जी व गुरुदेव महाराज का आशीर्वाद लेने आश्रम पहुंचे। भक्तों ने बाबा जी द्वारा दीवार पर बनाई हनुमान जी की मूर्ति के सामने सामूहिक सुंदर कांड व हनुमान चालीसा पाठ किया। मंदिर के मुख्य पुजारी व व्यवस्थापक त्यागी जी महाराज ने हनुमत् कृपा पत्रिका का फ़रवरी अंक 'नीब करौरी आश्रम स्थापना दिवस विशेष' श्रीहनुमान जी को समर्पित कर विमोचन किया। पत्रिका के विमोचन में सर्वश्री गौरव मिश्र, सुनील कुमार (दिल्ली), अनिल कुमार शर्मा, राकेश गुप्ता (मुरादाबाद), अमित गुप्ता, अबशेष वर्मा, रत्नेश मिश्र, प्रमोद शुक्ल, पं. श्याम नारायण पाण्डेय, रमेश शर्मा, डॉ. अरविन्द पाण्डेय, अश्विनी कुमार शुक्ल, ललित कुमार श्रीवास्तव, चंद्रकांत द्विवेदी आदि भक्तजन शामिल रहे। सभी भक्तों ने मंदिर आश्रम की ओर से आयोजित भंडारे में भोजन–प्रसाद ग्रहण किया। बाद में लखनऊ से गये सभी भक्तों ने नीब करौरी रेलवे स्टेशन का भी भ्रमण किया।